जिनागम

धर्म-परिवार-समाज-व्यवसाय का समन्वय

समस्त जैन समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

वर्ष -२७ अंक -६ फरवरी २०२५ सम्पादक-बिजय कुमार जैन पृष्ठ ४४ मूल्य - १५० रूपए प्रति

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

दिगम्बर जैन श्वेताम्बर

हम सब जैन हैं

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए INDIA नहीं का आव्हान करने वाले

भारत बोलो - INDIA छोड़ो

मैं भारत हूँ

INDIA नहीं

मैं भारत हूँ

INDIA नहीं

परम तपस्वी आचार्य विद्यासागर जी प्रथम पुण्य तिथि १८ फरवरी २०२५ पर

विनयांजलि

भारत सरकार द्वारा पंजीकृत क्र. U80300MH2021NPL369101

मैं भारत हूँ फाउंडेशन

भारतीय संस्कृति की ओर अग्रसर

अंतर्राष्ट्रीय संगठन द्वारा निवेदन

'एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

पत्रिका द्वारा होने वाली आय भारतीय भाषायी संस्कृति संवर्धन व हिंदी बनें राष्ट्रभाषा अभियान की सफलता पर खर्च किया जा रहा है

www.jinagam.co.in Remove INDIA Name From the Constitution INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए

दिगम्बर जैन श्वेताम्बर

युगप्रवर्तक, विश्व वंदनीय, संत शिरोमणि 108 आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के प्रथम समाधि दिवस पर भावपूर्ण विनयांजलि।

Prabhat Jain

Mob: 9820076501

परस्परोपग्रहो जीवानाम

परस्परोपग्रहो जीवानाम

SAWAI

FRAGRANCE ELEMENTS

303/A, Skyline Icon, Near Mital Industrial Estate, Andheri Kurla Road,
Andheri East, Mumbai, Maharashtra, Bharat-400059
Tel: 022-40294000, Direct No. 022-40294044, Fax 022-40294032,
email: mehul@prashasti.com

भारत को भारत ही बोला जाए

एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

युगप्रवर्तक, विश्व वंदनीय, संत शिरोमणि १०८ आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के प्रथम समाधि दिवस पर भावपूर्ण विनयांजलि।

Ashok - Jyoti Jain & Family

Mob: 9820286892

Akar Limited

(Promotion- Packaging - Publication)

FACTORY ADDRESS:

260/2A, Sheetal Industrial Area, Demni Road,
U. T. of Dadra & Nagar Haveli, Silvassa - 396230.

Medicca Press Limited - Mumbai

(A medical content and Brand consulting company)

RESIDENCE ADDRESS:

1803/1804, Cameron Heights Sundervan, Off New Link Road,
Tanishq Lane, Andheri West, Mumbai, Bharat- 400053

एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

Tariff Card

Monthly Magazine
JINAGAM

Reader Ship
17,000

Readers
All Jains

Release Date
10th date of Every Month

Magazine Size
A4

Print Area
19cm x 24 cm

Print in
Art Paper/Card

विज्ञापन दर 1st November 2022

ADVERTISEMENT RATE

Front Cover (With Photo/Sponsorship) Size : 185 x 225 mm	55,000/ + 5% GST
Front Page (Cover Inside) Size : 185 x 225 mm	33,000/ + 5% GST
Back Page (Cover) Size : 185 x 225 mm	35,000/ + 5% GST
Back Page (Inside Cover) Size : 185 x 225 mm	31,000/- + 5% GST
Opening of Magazine/3rd Page Size : 185 x 225 mm	32,000/- + 5% GST
Centre Page Size : 185 x 225 mm	40,000/- + 5% GST
Special Position on Editorial Page (if available) Quarter Page / Strip) Size : 185 x 50 mm	8,000/- + 5% GST
Full Page (Inside) Size : 185 x 225 mm	22,000/- + 5% GST
Half Page Size : 185 x 110 mm	12,000/- + 5% GST
Quarter Page Size : 90 x 110 mm	6,000/- + 5% GST

* Per Insertion

अगला अंक

जैन एकता

युगप्रवर्तक, विश्व वंदनीय, संत शिरोमणि
१०८ आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के प्रथम समाधि दिवस पर
भावपूर्ण विनयांजलि

Chandra Prakash Godha

Kamal Prakash Godha Sushil K. Godha Ramesh Chand Godha

RISHAB WORLD
Optus impex

Ratan Central, 9th Floor, Dr. Ambedkar Road, Parel (E), Mumbai, Maharashtra, Bharat-400012
web: www.rishabworld.com
एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

SIPANI
RITZY. POETIC. URBANE

YOUR DREAM HOME, A NEW LIFE FOR MANY.

90% OF PROFIT GOES TO CHARITY.

PRESENTING
SIPANI CITY

A 70 ACRE TOWNSHIP - MADAPPANAHALLI VILLAGE, ANEKAL TALUK, BENGALURU.

70 ACRES OF EVERYTHING YOU NEED - HOMES, HEALTHCARE, EDUCATION & MORE!

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
CLUSTER - 1 HIGH RISE APARTMENT	CLUSTER - 2 HIGH RISE APARTMENT	CLUSTER - 3 HIGH RISE APARTMENT	CLUSTER - 4 HIGH RISE APARTMENT	CLUSTER - 5 HIGH RISE APARTMENT	06 - EWS HOUSING	COMMERCIAL / OFFICE	SCHOOL - IN CA SITE OF CLUSTERS 4, 5 & 6	PLAYSCHOOL - IN CA SITE OF CLUSTERS 1	HOSPITAL - IN CA SITE OF LAND CLUSTERS 2 & 3
Land area -10 acres 31 guntas	Land area 14 acres 30 guntas	Land area 5 acres 10 guntas	Land area 10 acres 12.2 guntas	Land area 16 acres 14.37 guntas	Land area 2 acres 4.77 guntas	Land area 6 acres 17.63 guntas	Land area 1 acres 21.20 guntas	Land area 0.54 acres 21.55 guntas	Land area 1 acres

Sipani City - A Township Promoted by Sipani Properties

" An Ode to Humanity..."

२८ वें वर्ष में प्रवेश

वर्ष -२७, अंक ६, फरवरी २०२५

जिनागम

१२ अंकों का वार्षिक मूल्य रू.२१००/-

सम्पादक - बिजय कुमार जैन
वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
भारत को भारत ही कहा जाए
का आव्हान करने वाला एक भारतीय

उपसंपादक - संतोष जैन 'विमल'
कार्यकारी सम्पादक - अनुपमा शर्मा (दाधीच)
मो: ९७०२२ ०५२५२

- 'जिनागम' में प्रकाशित लेखों/कविताओं/ समाचारों/ विज्ञापनों से पूर्व सहमत होना सम्भव नहीं है।
- 'जिनागम' से सम्बन्धित समस्त विवादों के लिये न्याय क्षेत्र अंधेरी, मुम्बई ही मान्य माना जायेगा।

सम्पादकीय मुख्य कार्यालय
गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्रा. लि.
बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९
दूरभाष :- ०२२-४०१५८०९४
अणु डाक :- mailgaylordgroup@gmail.com
अन्तरताना:- http//www.jinagam.co.in

कृपया विज्ञापन बिल सदस्यता की राशि का भुगतान नीचे दिये गए बैंक में जमा करा सकते हैं

HDFC Bank
Andheri East Branch
RTGS / NEFT
IFSC: HDFC 0000592.
Account No.05922320003410

State Bank Of India
(01594) Marol Mumbai Branch.
IFS Code :SBIN0001594.
Account No. 030338727406.
in the name of GAYLORD PUBLICATIONS PVT.LTD.
Payment Transfer & Inform to us on: 9322307908

श्वेताम्बर दिगम्बर ○ **सम्पादकीय** ○ दिगम्बर श्वेताम्बर

पहले मातृभाषा फिर राष्ट्रभाषा

जैन एकता है जरूरी, समझें व समझाएं ८ से ४८ व ६२ से २२ हुए समीकरण से समझें

...वैसे तो मेरा रूझान राजनीतिक नहीं है पर राजनीति की समझ मुझे भी है, गली की राजनीति से केंद्र की राजनीति की समझ मुझे भरपूर है, कारण यह है कि जीवन पत्रकारिता क्षेत्र में ही तो गुजारा है लिखना पढ़ना व संबंध प्रगाढ़ बनाना ही तो जीवन का एक नज़र-ए-अंदाज रहा है।

गत दिनों भारत की राजधानी 'दिल्ली' के चुनाव की तरफ ले चलता हूं, मेरे सटीक विश्लेषण पर आपका ध्यान जाए तो आप भी मेरे द्वारा आवाह्नित 'जैन एकता' का साथ और समर्थक जरूर देंगे। गौरतलब है कि दिल्ली में विगत १२ वर्षों तक 'आम आदमी पार्टी' का शासन रहा, केंद्र शासित 'भारतीय जनता पार्टी' की तड़पन रही कि किस प्रकार 'दिल्ली' पर भाजपा का शासन हो, पर कैसे हो?

बता दूं कि I.N.D.I.A. की एकता के कारण गत आम चुनाव में भाजपा को शिकस्त खानी पड़ी, मिले २४० के आंकड़े कारण, दो अन्य राजनैतिक दल का सहारा लेकर केंद्र शासित सरकार बनी, इसी का सटीक उदाहरण रहा दिल्ली चुनाव, यदि कांग्रेस और 'आप' मिलकर चुनाव लड़ती तो ८ से ४८, यानी २०२० के चुनाव में 'आप' ने ६२ सीटे जीत ली जो इस बार धड़ाम से २२ पर आ गयी, जबकि भाजपा गत चुनाव में मात्र ८ सीटों पर सिमट कर रह गई थी।

इस बार यदि कांग्रेस व 'आप' जो I.N.D.I.A. गठजोड़ का हिस्सा है, अपने-अपने के घमंड के कारण अलग-अलग चुनाव लड़े और धाराशाही हो गए, यानी दो की लड़ाई में तीसरे ने बाजी मारी 'आप' ६२ सीटों से २२ पर पहुंच गई और भाजपा ८ सीटें से ४८ सीटों पर ज़ीत दर्ज कर ली 'दिल्ली' शासन पर अपना अधिकार कर लिया।

यह 'जैन एकता' के लिए एक उदाहरण है। 'जिनागम' पत्रिका के द्वारा विगत २७ वर्षों से जैन समाज के साधु संतों और श्रावक श्राविकाओं से निवेदन करता रहा हूं कि 'जैन एकता' है जरूरी, इसके बिना भविष्य है अधूरा, जागें समय है, मिलकर रहेंगे तो बचेगा सब कुछ, ४ करोड़ की जनसंख्या से ५० लाख पर हम पहुंच गए हैं, उसमें भी कई पंथों में बंटे हैं। सच्चाई 'जिनागम' के प्रबुद्ध पाठकों के समक्ष है, निर्णय हम सभी को मिलकर लेना है? जय जिनेंद्र!

SBI
for payment

HDFC BANK
for payment

आपका अपना
जैन एकता का सिपाही
बिजय कुमार जैन
वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
हिंदी सेवी-पर्यावरण प्रेमी
भारत को भारत ही कहा जाए
का आव्हान करने वाला एक भारतीय
मो.९३२२३०७९०८

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

KATARIA
DELIVERING DREAMS

INDIA'S NO.1 AUTOMOBILE DEALER

Kataria Group, is one of the fastest growing and diversified business conglomerates across the state of Gujarat. Since 1956, the group has served over a million of customers through its several businesses.

AUTOMOBILES | INFRASTRUCTURE | INSURANCE | LOGISTICS | FINANCE | RECYCLING

We represent these prestigious auto brands

MARUTI SUZUKI ARENA | NEXA | BHARATBENZ | PORSCHE | HONDA | TVS | ATHER

Kataria Group

Corporate Office:
Kataria Arcade, Nr. Adani Vidya Mandir, Off. S.G. Road, Makarba, Ahmedabad - 380 051.
Helpline Number: +91-75729 00000 | Website: www.katariagroup.co

आचार्यश्री विद्यासागरजी का जीवन परिचय

पूर्व नाम	: श्री विद्याधरजी
पिताश्री	: श्री मल्लप्पाजी अष्टगे (मुनिश्री मल्लिसागरजी)
माताश्री	: श्रीमती श्रीमंतीजी (आर्यिकाश्री समयमतिजी)
भाई/बहन	: चार भाई, दो बहन
जन्म स्थान	: चिक्कोड़ी (ग्राम- सदलगा के पास), बेलगांव (कर्नाटक)
जन्मतिथि	: आश्विन शुक्ल पूर्णिमा (शरद पूर्णिमा) वि.सं. २००३, १०-१०-१९४६, गुरुवार, रात्रि में १२.३० बजे।
जन्म नक्षत्र	: उत्तरा भाद्रपद।
मातृभाषा	: कन्नड़।
शिक्षा	: ९वीं मैट्रिक (कन्नड़ भाषा में)
ब्रह्मचर्य व्रत	: श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, चूलगिरि (खानियाजी), जयपुर (राजस्थान)
प्रतिमा	: सात (आचार्यश्री देशभूषणजी महाराज से)
स्थल	: १९६६ में श्रवणबेलगोला, हासन (कर्नाटक)
मुनि दीक्षा स्थल	: अजमेर (राजस्थान)
मुनि दीक्षा तिथि	: आषाढ़ शुक्ल पंचमी, वि.सं. २०२५, ३०-०६-१९६८, रविवार
आचार्य पद तिथि	: मार्गशीर्ष कृष्ण द्वितीया- वि.सं. २०२९, दिनांक २२-११-१९७२, बुधवार
आचार्य पद स्थल	: नसीराबाद (राजस्थान) में, आचार्यश्री ज्ञानसागरजी ने अपना आचार्य पद प्रदान किया।

इंडिया नहीं भारत बोलें

युगप्रवर्तक, विश्व वंदनीय, संत शिरोमणि १०८ आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के प्रथम समाधि दिवस पर भावपूर्ण विनयांजलि

Mahavir Prasad Jain Vinod Gangwal Sunil Jain Manoj Gangwal

Ajanta corporation

Stockist Of Dyes, Chemical & Solvents
Supply Of Paint Coting Textile Construction Industry

Off.: Shop No. 6, Tejal Appartment, Nr. Adani Electricity, Shimpoli Road, Borivali West, Mumbai, Maharashtra, Bharat- 400092
Mob. : 9820077043 / 9867304325 / 9819877043 / 9702079321
email : neelkamalenterprises@hotmail.com

'एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

व्यसनमुक्ति के प्रबल प्रेरक आचार्य-प्रवर श्री रामलालजी म.सा.

निवासी	: देशनोक
पिता का नाम	: श्री नेमचन्दजी
माता का नाम	: श्रीमती गवराबाई
गोत्र	: भूरा
जन्म तिथि	: चैत्र सुदी 14, वि.सं. 2009
दीक्षा तिथि	: माघ सुदी 12, वि.सं. 2031
दीक्षा स्थल	: देशनोक
दीक्षा गुरु	: आचार्य श्री नानेश
दीक्षा के समय उम्र	: 22 वर्ष 9 माह 8 दिन
युवाचार्य पद तिथि	: फाल्गुन सुदी 3, वि.सं. 2048
युवाचार्य पद प्रदान स्थल	: बीकानेर
युवाचार्य पद के समय दीक्षा पर्याय	: 17 वर्ष 21 दिन
युवाचार्य पद के समय उम्र	: 39 वर्ष 10 माह 10 दिन
युवाचार्य काल में दीक्षा (संतों की)	: 9
आचार्य पद तिथि	: कार्तिक बदी 3, वि.सं. 2056
आचार्य पद स्थल	: उदयपुर
आचार्य पद के समय उम्र	: 47 वर्ष 6 माह 4 दिन
आचार्य पद के समय दीक्षा पर्याय	: 24 वर्ष 6 माह 6 दिन
शासनकाल में दीक्षा (संत-सती की)	: 254

श्वेताम्बर जैन दिगम्बर

आचार्य भगवंत युगपुरूष रामलाल जी म.सा. के
दीक्षा दिवस ९ फरवरी पर कोटि-कोटि नमन

राम चमक रहे भानु समाना

Ghewar Chand Sipani
Mob : 9435044355/ 9706080000

KIRANSHREE
SWEETS

SC Road, Athgaon Guwahati, Assam, Bharat-781001

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

!! जय गुरू नाना !! !! जय महावीर !! !! जय गुरू राम !!

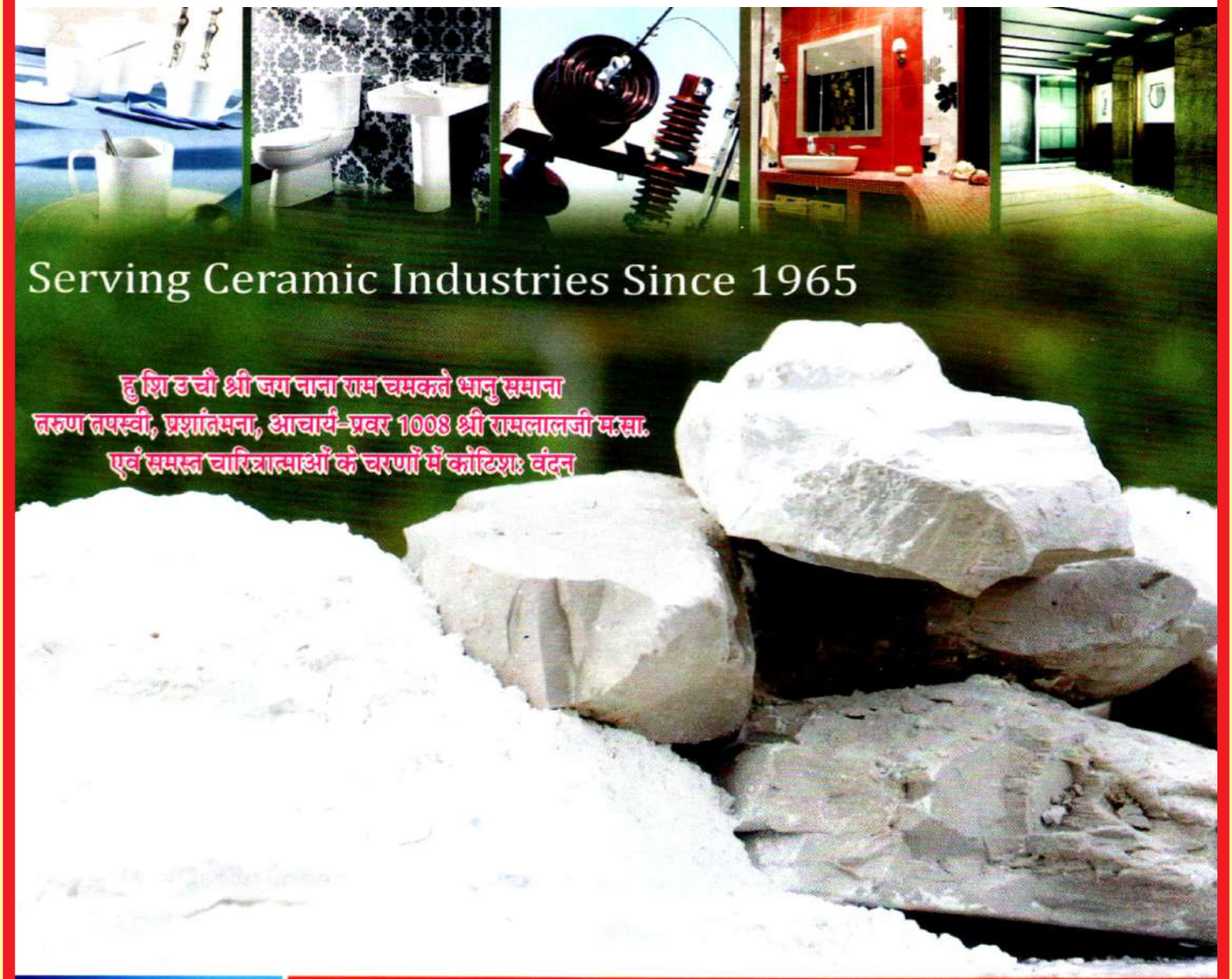

A Premier Clay Specialists in The Country...

- 48 years of experience with efficient processing technology and high-quality deposits of raw materials.
- Extraction, Processing and Refining of industrial minerals, particularly Ball Clay, China Clay, Bentonite, Silica Sand, Quartz, Potassium & Sodium Feldspar.
- In-depth knowledge of the market and understands the need for high-grade raw materials in the ceramic industries.
- Extraction of raw materials to the final delivery of the finished product, all of our procedures are subjected to ongoing quality monitoring.
- Export good quantity of minerals to various countries.
- Import of many others minerals and raw materials for Indian ceramics industries.

JLD MINERALS
Jaichand Lal Daga group

Corporate Office :
1st Floor, Labhuji Ka Katla,
Bikaner-334001, Rajasthan, INDIA

Phone : +91-151-2220380 / 2521624 / 3294234
FAX : +91-151-2522768, Mobile No. 09829217944
Email : wbcclay@yahoo.com

www.jldminerals.com

!! जय गुरु नाना !! !! श्री महावीराय नमः !! !! जय गुरु राम !!

राम चमक रहे भानु समाना

राम गुरू का है संदेश व्यसन मुक्त हो सारा देश
राम गुरू विराट है दीक्षाओं का ठाठ है
संयम इनका सख्त है तभी तो लाखों भक्त है

स्व. भैरुधनजी सिपानी

स्व. सोहनलालजी सिपानी

जेठीदेवी सिपानी

विमला कमल सिपानी
कविता यशवंत बोथरा
काजल संजय सांखला
पूजा चंदन बोरा

एकता संकेत देवडा
स्नेह हितेह शाह
अभिषेक सिपानी
पावन स्मृति

Now we are also Manufacturers of:

ALIMINIUM WIRE RODS

Size: 6mm, 7.5mm, 9.5mm, 13mm

For Your requirements Contact:
Yaswant Bothra: 9845844449
abhinandanaluminium@gamil.com

ABHINANDAN

श्रीमती व श्री कमल सिपानी

Abhinandan Petro Pack Pvt. Ltd.

Manufacturors of: PLASTIC WOVEN SACKS & LENO SACKS EC/ALLOY WIRE ROD/DEOX ROD & ALUMINUM WIRE

Work & Factory : No. 27/1A, Vadera Manchena Halli, Kallu Balu Post, Jigani Hobli, Anekal Taluk., Bangalore, Karnataka, Bharat - 562106.

दूरध्वनि - 080-27825204 Grams : ABHISHEK

email: abhinandanppi@gmail.com

भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove 'INDIA' Name From The Constitution

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जैनत्व की राह पर सभक्त साधु मार्गी सम्प्रदाय

राम चमक रहे भानु समाना

साधुमार्गी पावन परम्परा के महान् आचार्य श्री हुक्मीचंदजी म.सा. का जन्म पौष शुक्ला ९ वि.सं. १८६० को टोडारायसिंह नगर में श्री रतनचन्दजी श्रीमती मोतीदेवी चपलोत के यहाँ हुआ। अल्पवय में ही पूज्यश्री अद्‌भुत प्रतिभा के धनी, आपको संसार में अभिरुचि नहीं थी। संसार को असार जानकर संयम ग्रहण करने का दृढ़ संकल्प जागृत हो उठा। मिंगसर सुदी २ वि.सं. १८७९ को 'बूंदी' में आपने पूज्य श्री लालचंदजी म.सा. से दीक्षा ग्रहण की। मुनि अवस्था में आपने आगमों का जलस्पर्शी अध्ययन किया। आपने साधुओं में शिथिलता को देख अपने गुरु से संयम की शुद्ध पालना की भावना दर्शाई, तदनन्तर गुरु आज्ञा पाकर और पृथक विचरण करते हुए २१ साल तक बेले-तेले की उग्र तपस्या की। १२ महीने केवल एक ही चादर धारण करना, जीवनपर्यन्त मिठाई व तली वस्तु का त्याग तथा १२ द्रव्यों से अधिक नहीं खाने का प्रण, प्रतिदिन २००० नमोत्थुणं द्वारा देवस्तुति, ऐसी कठोरतम प्रतिज्ञों धारण की, जहाँ-जहाँ भी आप पधारे, आपके शुद्ध संयम एवं अनुशासन को देखकर जनता नतमस्तक होने लगी। माघ सुदी ५ वि.सं. १९०७ को बीकानेर में चतुर्विध संघ से आपने आचार्य पद स्वीकार किया। पूज्यश्री की कतई भावना नहीं थी कि वे आचार्य बनें, आपके तेज से प्रभावित होकर नाथद्वारा प्रवचन सभा में सोने के सिक्कों की बारिश हुई,ये सिक्के आज भी नाथद्वारा के लोगों के पास देखे जा सकते हैं। रामपुरा में मुमुक्षु राजीबाई की बेड़ियाँ पूज्यश्री के सहज दृष्टि पड़ते ही बन्धन से मुक्त हो गई, ऐसी कई घटनों आपके शुद्ध संयमी परिवेश के कारण घटित हुई। पूज्यश्री अपने अन्तकरण में रमण करते हुए वैशाख शुक्ला ५ संवत् १९१७ को जावद में संलेखना संथारा के साथ महाप्रयाण को प्राप्त हुए।

आचार्य शिवलालजी म.सा.

आपका जन्म मालव भूमि में नीमच के पास 'धामनिया' नामक एक छोटे-से ग्रामीण अंचल में संवत् १८६७ पौष सुदी १० को मातुश्री कुन्दनदेवी की रत्नधारिणी कुक्षी से हुआ, आपके पिताश्री टीकमचंदजी बोड़ावत से बचपन में ही आपको सुसंस्कारों का खजाना प्राप्त हुआ। श्रमणत्व की साधना के लिए आपने वि. सं. १८९१ को बूंदी में पूज्य श्री दयालचंदजी म.सा. के मुखारविन्द से दीक्षा ग्रहण की। पूर्ण सजगता एवं विनीत भाव से अध्ययन के कारण अल्प समय में ही आपकी प्रतिभा निखर उठी। संवत् १९०७ की माघ सुदी ५ को बीकानेर पाँच दीक्षाओं के ऐतिहासिक अवसर पर संघ के उत्तरदायित्व के रुप में आपको युवाचार्य पद प्रदान किया गया। पूज्यश्री ने अपने दीर्घ अनुभवों के साथ ७२ कमलों की समाचारी का निर्धारण किया,जिसका आज भी पालन किया जा रहा है। आपने ३३ वर्ष तक एकान्तर तप की साधना की और अन्त में संलेखना संथारा सहित संवत् १९३३ की पौष शुक्ला ६ को 'जावद' में मोक्षगामी हुए।

आचार्य श्री उदयसागरजी म.सा.

मारवाड़ की मरुधरा जोधपुर में श्रेष्ठीवर्य नथमलजी खिंवेसरा की धर्मपत्नी जीवीबाई की कुक्षि से संवत् १८७६ को शुभ नक्षत्र में आपका जन्म हुआ। आपका विवाह तय करने के साथ ही जैसे ही आपकी बारात वधु पक्ष के तौरण पर पहुँची, आपकी पाग नीचे गिर गई, शेष पृष्ठ १४ पर ...

INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
INDIA GATE का नाम
Remove INDIA Name From The Constitution
'भारतद्वार' लिखवायें

राम चमक रहे भानु समाना

महत्तम महोत्सव, शिखर महोत्सव

परम् पूज्य व्यसन मुक्ति के प्रणेता 1008 आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के
उत्कृष्ट संयमी जीवन के 50 वर्ष सुवर्ण दीक्षा महोत्सव के रूप में
9 फरवरी 2025 को पूर्ण होने पर हार्दिक शुभकामनाएँ मंगलकामनाये!!

''गुरु बिन ज्ञान न होत है, गुरु बिन दिशा अंजान,
गुरु बिन इन्द्रिय न सधें, गुरु बिन बढ़े न शान।
गुरु मन में बैठत सदा, गुरु है भ्रम का काल,
गुरु अवगुण को मेटता, मिटें सभी भ्रमजाल।''

श्रद्धानवत : शांतिलाल-बिमला देवी, संजय-निलम, अजय-ज्योति, तुषार-साक्षी, रीतिक, प्रजय, मिराया, द्रुव एवम् समस्त सांड परिवार

YOUR TRUST

FLEXIBILITY IS OUR STRENGTH
52 RAKSHA
SHAND GROUP
SINCE 1977

RAKSHA® PIPES

OUR GUARANTEE

SINCE 1977

FIRST IN INDIA
ISI FITTINGS WITH ADVANCED CO-MOULDED DURO RING SEAL

INDIA'S MOST TRUSTED BRAND

Sri Shantilal, Sanjay, Ajay & Tushar Shand
SHAND GROUP OF INDUSTRIES
No. 52, 7th Cross, Wilson Garden, Bengaluru - 560027.INDIA
Phone: +91-80-22235726, 22271902, 22225734.
Fax: +91-80-22234779. E-mail: mkt@shandgroup.com

RAKSHA FLO
P.T.M.T TAPS & ACCESSORIES

Diamond Duroflex
Diamond DUROLON
Now with new M.R.O. Technology Resists high Impact
LEAK PROOF
NSF/ANSI/CAN 61 IAPMO
LEAD FREE
UV STABILIZED
IS 15778 : 2007 CM/L NO : 2526149
cftri CERTIFIED
LUCALOR FRANCE

www.shandgroup.com
रक्षा – जीवन भर की सुरक्षा
www.rakshapipes.com

पृष्ठ १२ से ... बस पाग गिरते ही आपको वैराग्य उत्पन्न हो गया और आप पुन: घर की ओर लौट गये। चैत्र सुदी ११ वि.सं. १८९८ को आपने श्री हरषचंदजी म.सा. के पास बूंदी में भागवती दीक्षा ग्रहण की। आपकी विनयशीलता एवं ज्ञानपीपासा अत्यन्त तीव्र थी। रामपुरा में एक सुश्रावक पंडितरत्न श्री केदारजी गंगा ने आपके धैर्य की परीक्षा ली, जिसमें आप शत-प्रतिशत सफल रहे। आपकी अद्‌भुत प्रतिभा को देखकर आचार्य श्री शिवलालजी म.सा. ने पौष शुक्ला सप्तमी वि.सं. १९२५ को युवाचार्य पद प्रदान किया। आचार्य श्री शिवलालजी म.सा. के महाप्रयाण के पश्चात वि.सं. १९३३ की पौष शुक्ला ६ को साधु संघ का उत्तरदायित्व आपश्री के सक्षम कंधों पर आ गया। आप छोटे-बड़े अनुशासन प्रिय साधकों के प्रति अटूट स्नेह भाव बरसाते और जो भी अनुशासन भंग करते उनको कठोर दंड देने में पीछे नहीं रहते थे। वि.सं. १९२८ को पाली में एक जैनाचार्य श्री किशनसागरजी म.सा. ने आपको शास्त्रार्थ हेतु चुनौती दी, जिसमें आप विजयी हुए। आपने तत्कालीन पंजाब, कराची, रावलपिंडी तक की सुदूर यात्रों की। आपको वचन सम्पदा की सिद्धि प्राप्त थी। आपने अपने शासनकाल में जिनशासन की अद्‌भूत प्रभावना की एवं वि.सं. १९५४ माघ सुदी १० को 'रतलाम' में संथारा संलेखना सहित देवलोक हुए।

आचार्य श्री चौथमलजी म.सा.

निर्ग्रन्थ शिरोमणि आचार्य श्री चौथमलजी म.सा. का जन्म मरुधरा के पाली में सुप्रसिद्ध धोका परिवार में श्रेष्ठीवर्य श्री पाखरदाजी की धर्मपत्नी हीराबाई कुक्षी से वि.सं. १८८५ वैशाख शुक्ला ४ को हुआ। माता-पिता के आकस्मिक वियोग से आपकी अन्तर्आत्मा संसार से विरक्त हो उठी। वि.सं. १९०९ की चैत्र शुक्ला १२ को श्री हरकचंदजी म.सा. के मुखारविन्द से ब्यावर में आपकी दीक्षा सम्पन्न हुई। अल्पकाल में ही आपकी गिनती जैन जगत के मूर्धन्य विद्वानों में होने लगी, आपके ज्ञान दर्शन चारित्र की छाप सम्पूर्ण संघ पर पड़ी, इसी कारण तत्कालीन शासन व्यवस्था को देखते हुए आचार्य श्री उदयसागरजी म.सा. ने वि.सं. १९५४ आसोज शुक्ला पूर्णिमा को आपको युवाचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया। युवाचार्य काल में आपने सुदृढ़ संगठन हेतु नीति निर्धारण का कार्य किया। वि.सं. १९५४ की माघ शुक्ला १० को आप आचार्य पद पर आरुढ़ हुए। आपने १५० के आस-पास संतों के संगठन हेतु ९४ कलमों की समाचारी निर्धारित की। आपने जिनशासन को दैदीप्यमान करने हेतु कई उल्लेखनीय कार्य किये। आपका महाप्रयाण वि.सं. १९५७ कार्तिक शुक्ला १० को 'रतलाम' में संलेखना संथारा सहित हुआ।

आचार्य श्री श्रीलालजी म.सा.

आपका जन्म ढुंढार प्रांत के टोंक शहर में श्रेष्ठीवर्य श्री चुन्नीलालजी बम्ब की धर्मपरायण सद्‌गुणों से सुसज्जित धर्मपत्नी श्रीमती चाँदकंवर बाई की कुक्षी से विक्रम संवत् १९२६ की आषाढ़ शुक्ला १२ को हुआ। आपके गर्भ में आते ही परिवार में अन्न-धन्न व्यापार में विपुल वृद्धि हुई, इसीलिए आपका नाम श्रीलाल रखा गया। आपने ६ वर्ष की अल्पआयु में प्रतिक्रमण, २५ बोल आदि कंठस्थ कर लिये। मुनिगणों का सान्निध्य पाकर संसार की असारता का बोध हुआ, जिससे संसार के कार्य से उदासीन रहने लगे, आपकी यह स्थिति देखते हुए पारिवारिकजनों ने आपकी शादी मानकंवरबाई से करवा दी। शादी के बाद भी आपका मन सांसरिक कार्यों में नहीं लगा एवं आपने ब्रह्मचर्य की दुसाध्य कठोरतम गति ग्रहण कर ली एवं 'रतलाम' में आचार्य श्री उदयसागरजी म.सा. की सेवा में पहुँचे। घरवालों द्वारा आपश्री पर अनेक कठोर प्रतिबन्ध लगाने के बावजूद भी आपके वैराग्य भाव में कोई अन्तर नहीं आया, बल्कि विशेष दृढ़ता आ गई। परिवार वालों का प्रयत्न रहा कि आप संसार के बन्धन में बंधें, लेकिन आपश्री का आन्तरिक वैराग्य होने से सभी का प्रयास निष्फल रहा, तदन्तर आप हवेली के ऊपरी भाग से कूद गये। धन्य पूज्यश्री जी को, जिन्होंने स्वयं प्रतिज्ञा लेकर अपने प्राणों की परवाह नहीं की। आपकी वैराग्य भावना को देखकर पारिवारिकजनों ने आपकी विधिवत् दीक्षा विक्रम संवत् १९४५ माघ कृष्णा ७ को बणोठा में श्री किशनलालजी म.सा. के श्रीमुख से सम्पन्न करवाई। विक्रम संवत् कार्तिक सुदी १० को 'रतलाम' में आप आचार्य पद पर आरुढ़ हुए, उस समय आपकी उम्र ३१ साल थी। अत्याधिक सान्निध्य में बड़े-बड़े रियासतों के राजा-महाराजा, हाकिम-दीवान, ठाकुर आदि आते एवं आपके उपदेशों से अत्यधिक प्रभावित होते, आपसे जीवदया तप-साधना आदि का उपदेश सुन हर्षित होते। फलस्वरुप कई स्थानों पर पशु बली बंद हुई एवं जीवरक्षा के कार्य भी हुए। आपके जीवन से देशी जन ही नहीं विदेशी जन भी प्रभावित होते रहे। हिन्दु-मुस्लिम सिख-ईसाई सभी सम्प्रदाय के व्यक्तियों ने आपकी अमृतमयी वाणी से प्रेरणा ग्रहण की, आपने अपने उपदेश से २५०० बकरों, २० पाड़ों और एक सिंह को एक साथ अभयदान दिलाया, आपके प्रवचनों में शिक्षा का महत्व भी हमेशा प्रतिपादित होता रहा, जिससे अनेक स्थानों पर शिक्षा के केन्द्र स्थापित हुए। विक्रम संवत् १९७७ आषाढ़ सुदी ३ को 'जैतारण' से आपको मोक्ष प्राप्त हुआ।

आचार्य श्री जवाहरलालजी म.सा.

थांदला मालवा में आपका जन्म श्रीमती नाथीबाई एवं पिताश्री जीवराजजी कवाड़े के यहाँ विक्रम संवत् १९३२ की कार्तिक सुदी ४ को हुआ। नवजात बालक का भव्य ललाट, सुनहरा रंग, सुन्दर देह दृष्टि को देखकर आपका नाम 'जवाहर' रखा गया। अल्पवय में ही आपके माता-पिता का स्वर्गवास हो जाने से आपका मन संसार से विरक्त हो गया। फलस्वरूप विक्रम संवत् १९४८ की मिंगसर सुदी २ को 'लिंबड़ी' में आपकी दीक्षा सम्पन्न हुई। आपके दीक्षा प्रदाता श्री घासीलालजी म.सा. थे। आपके गुरु भ्राता श्री मगनलालजी म.सा. थे। आपने अनेक शास्त्रों का अध्ययन करने के साथ ही 'थोकड़े' आदि का अच्छा अभ्यास किया, आपने उस समय व्याप्त दया दान विरोधी धारणों का पूर्ण रूप से खण्डन किया। विक्रम संवत् १९७७ आषाढ़ शुक्ला ३ को 'भीनासर' में आपको आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया गया। आपके शासन में जिनशासन की अद्‌भुत तथा अपूर्व धर्म प्रभावना हुई। आपने समाज में व्याप्त कुरीतियों के उन्मूलन के लिये खूब प्रयास किये तथा अपूर्व धर्म प्रभावना हुई। आपने समाज में व्याप्त कुरीतियों के उन्मूलन के लिये खूब प्रयास किये तथा जनमानस को गुमराह कर रही अल्पारंभ महारंभ, मिल के वस्त्र, चर्बी, दयादान आदि की सटीक व्याख्या देकर जनमानस की भ्रान्ति को दूर किया। आपने धर्म की रक्षा के साथ राष्ट्र की रक्षा का संदेश दिया, जिससे प्रभावित होकर बड़े-बड़े राष्ट्रीय नेता सर्वश्री मदनमोहन मालवीय, बालगंगाधर तिलक, बिट्ठल भाई पटेल, सरदार वल्लभभाई पटेल ने आपके सानिध्य का लाभ उठाया। आप सुसंगठन के पूर्ण हिमायती रहे। आपके शेष पृष्ठ १५ पर ...

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

पृष्ठ १४ से ... प्रवचनों की श्रृंखला 'जवाहर किरणावली' विद्वत जगत् में सर्वोपरी स्थान रखती है तथा आदर की दृष्टि से पढी जाती है। विक्रम संवत् २००० आषाढ शुक्ला ८ को संलखेना संथारा कर 'भीनासर' में आपका महाप्रयाण हुआ।

आचार्य श्री गणेशीलालजी म.सा.

वीर वसुंधरा मेद पाठ की राजधानी 'उदयपुर' के ही विशिष्ट राज्य कर्मचारी श्रीमान साहबलालजी मारू की धर्मपत्नी इंद्राबाई की कुक्षि से विक्रम संवत् १९४७ की श्रावण सुदी तृतीया को एक बालक ने जन्म लिया, जिसके माता-पिता एवं पारिवारिक सदस्यों ने शरीर सम्पदा को देखकर 'गणेश' नाम रखा। १२-१३ वर्ष की अल्पायु में हिन्दी, उर्दू, फारसी भाषाओं का गहन अध्ययन किया। माता-पिता, बहन एवं पत्नी के प्लेग की चपेट में आ जाने से उनका स्वर्गवास हुआ, जिससे आपका मन संसार के माया-जाल से विचलित हो उठा। आपने मिंगसर कृष्णा १ विक्रम संवत् १९६२ को उदयपुर में भागवती दीक्षा पूज्य आचार्य श्री जवाहरलालजी म.सा. के श्रीमुख से ग्रहण कर अपनी अद्‌भुत का प्रतिभा परिचय दिया। आपने गुरू द्वारा ली गई परीक्षा में व्याकरण में १०० में से ८२ अंक साहित्य में ९४ अंक एवं मौखिक में १०० में से १०० अंक प्राप्त कर अपनी निर्मल प्रज्ञा का उदाहरण प्रस्तुत किया। आपके नाम का संधिविच्छेद करने पर 'गण-ईश' यानी गणेश रूप में सार्थक हुआ। आप अनेक गुणों के स्वामी बने। आपने भी जीवदया का बेजोड़ प्रचार-प्रसार किया। आपको युवाचार्य पद फाल्गुन सुदी ३ विक्रम संवत् १९९० को 'जावद' में प्राप्त हुआ। विक्रम संवत् २००८ आषाढ़ शुक्ला ८ को 'भीनासर' में आप आचार्य पद पर प्रतिष्ठित हुए। आपमें गजब की सहनशीलता थी। सम्पूर्ण श्रमण संघ के वृहद साधु सम्मेलन में आपको विक्रम संवत् २००९ में वैशाख सुदी १३ को ४० हजार लोगों के मध्य ३४१ संत और ७६८ साध्वी रत्नों की उपस्थिति में उपाचार्य पद की चादर मारवाड़ के 'सादड़ी' में ओढ़ाई गई, इतने विशाल संघ के एकमात्र स्वामी होते हुए भी आपने संघ में अनुशासनहीनता को प्रशय नहीं दिया। श्रमण संघ में शिथिलाचार को देखते हुए आपने ३० नवम्बर १९६० को श्रमण संघ से अपने आपको अलग कर दिया। आप संगठन के प्रबल हिमायती थे, लेकिन श्रमण संस्कृति को सर्वोपरी मानकर चलते थे। कथनी और करनी आपकी जीवन की विशेषता थी। आपका महाप्रयाण विक्रम संवत् २०१९ माघ कृष्णा दूज को संलेखना संथारा के साथ 'उदयपुर' में हुआ।

आचार्य श्री नानालालजी म.सा.

वीर वसुंधरा चित्तौड़ के 'दांता' गांव में वि.सं. १९७७ की ज्येष्ठ शुक्ला द्वितीया को एक युगपुरुष का जन्म श्री मोड़ीलालजी पोखरना एवं श्रीमती श्रृंगारबाई के पुत्र के रूप में हुआ। हर्षोल्लास के वातावरण में परिवार वालों ने शुभ नाम 'गोवर्धन' रखा। आपने बचपन से ही अपनी मेधावी बुद्धि का परिचय देते हुए बालकों की टोली का नेतृत्व किया। आप अपनी माता के प्रति विनयवान तथा आदर भाव का एक आदर्श रूप रहे, अपनी बहन की तपस्या के उपलक्ष्य में जब आपने 'भादसोड़ा' में मेवाड़ मुनि श्री चौथमलजी म.सा. के मुखारविन्द से छठे आरे का वर्णन सुना तो आपका मन संसार से विरक्त हो गया। आपने अल्पकाल में ही सामायिक सूत्र, प्रतिक्रमण सूत्र, २५ बोल, दशवैकालिक सूत्र **शेष पृष्ठ १६ पर...**

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

पृष्ठ १५ से ... आदि कंठस्थ कर लिया। वि.सं. १९९६ पौष शुक्ला अष्टमी को कपासन में आपकी भव्य दीक्षा आचार्य श्री गणेशीलालजी म.सा. के श्रीमुख से सम्पन्न हुई। आपने दीक्षा अंगीकार कर अल्पकाल में सैकड़ों थोकड़े कंठस्थ करने के साथ ही प्रमाणनय तत्वालोक, षट्-दर्शन समुच्चय, स्याद्वाद मंजरी आदि अनेक ग्रंथों का तलस्पर्शी गहन अध्ययन करते हुए जैन आगमों के गहन गंभीर रहस्य का अपनी निर्मल प्रज्ञा से अध्ययन किया। वि.सं. २०१४ की आसोज शुक्ला द्वितीया को आचार्य श्री गणेशीलालजी म.सा. ने आपकी तीक्ष्ण प्रज्ञा को देख आपको साधुमार्गी संघ के युवाचार्य पद के रूप में उदयपुर के राजमहल में प्रतिष्ठापित किया। आपश्री जी ने सूझ-बूझ से संघ के विकास हेतु कई आयाम प्रदान किये। आपने गुरु की आग्लान भाव से सेवा करते हुए एक आदर्श पेश किया। वि.सं. २०१९ माघ कृष्ण द्वितीय को आप अष्टम् पाट पर 'उदयपुर' में आसीन हुए। आचार सम्पदा, श्रुत सम्पदा, वचन सम्पदा, वाचना सम्पदा, मति सम्पदा, प्रयोगमति सम्पदा, संग्रह परिज्ञा सम्पदा से ओत-प्रोत आचार्यदेव ने जिनशासन की भय जाहोजलाली की। आपने समता कवच धारण करके सत्य सिद्धान्त का शंखनाद कर शिथिलाचार के चक्रव्यूह का भेदन कर श्रमण संस्कृति के प्रति सजग रहे। आपने आचार्य पद के पश्चात् जिनशासन की जो भव्य प्रभावना की, उसे देख लोगों को पंचम आचार्य श्री श्रीलालजी म.सा. की भविष्यवाणी की याद दिलाई, कि मुझे क्या देखते हो, आठवां पाट जिनशासन को और भी दैदीप्यमान करेगा, यथार्थ रूप में विकट मोड़ में आपश्री की समता बेजोड़ रही। आचार्यदेव ने अपने आचार्य काल में राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, गुजरात, महाराष्ट्र, उड़ीसा आदि राज्यों में हजारो किलोमीटर की पदयात्रा के दौरान 'मालवा' में धर्मपाल समाज विकास हेतु क्रान्ति कर 'बलाई' समाज को प्रतिबोधन दिया। अपने शासनकाल में लगभग ३५० दीक्षों प्रदान कर शासन में महत्ती प्रभावना की। स्थानकवासी जैन समाज के पिछले ५०० वर्षों के इतिहास में 'रतलाम' में एक साथ २५ दीक्षा देकर एक नवीन इतिहास की सर्जना की। समता दर्शन एवं समीक्षण ध्यान को देकर प्राणीमात्र पर महान् उपकार किया, संघ आपका ऋणी रहेगा। वि.सं. २०५६ कार्तिक बदी ३ को 'उदयपुर' में संलेखना संथारा से आपका महाप्रयाण हो गया।

नवम पाट पर विद्यमान वर्तमान आचार्य श्री रामेश

जिन शासन क्षितिज में साधुमार्गी संघ का विशिष्ट स्थान है, समय-समय पर अनेक महान् क्रान्तिकारी प्रभावशाली आचार्यों ने इस संघ को पल्लवित, पुष्पित एवं संवर्धित किया है, इसी कड़ी में शास्त्राज्ञ, तरुणतपस्वी, प्रशान्तमना, व्यसनमुक्ति के प्रणेता आचार्य श्री रामलालजी म.सा. वर्तमान में संघनायक के रूप में इस विशाल संघ को निरन्तर अभिवृद्धि की और आगे बढा रहे हैं। आपका जन्म 'देशनोक' के भूरा कुल में विक्रम संवत् २००९ चैत्र शुक्ला चतुर्दशी को रत्नधारिणी माता गवरा की कुक्षि से हुआ।

आपके पिता का नाम नेमीचंदजी था। बचपन से ही आपको अपने पारिवारिकजनों से सुसंस्कारों का खजाना प्राप्त हुआ। बाल्यावस्था से ही आप प्रखर मेधावी एवं बुद्धिशील व्यक्तित्व के धनी थे। 'जवाहर किरणावली' की कथा पढ़ने से आपको वैराग्य उत्पन्न हुआ एवं आपने वि.सं. २०३१ माघ शुक्ला १२ को 'देशनोक' में समताविभूति आचार्य श्री नानेश के मुखारविन्द से भागवती दीक्षा अंगीकार की। आपश्री में विनय, अनुशासन एवं समय की सजगता को ध्यान में रखते हुए आचार्य श्री नानेश ने वि.सं. २०४७ आसोज सुदी दूज को 'चित्तौड़गढ़' में मुनिप्रवर के पद से अलंकृत किया। आपश्री अप्रतिम प्रतिभा के धनी एवं आगमों के गूढ़ व्याख्याता हैं। आपकी इस विशेषता के कारण आप शास्त्रज्ञ एवं परमागम रहस्यज्ञाता की उपाधि से सुशोभित हुए। आपकी सारणा, वारणा व धारणा के गुणों से प्रभावित होकर वि.सं. २०४८ फाल्गुन शुक्ला तृतीया को 'बीकानेर' के राजमहल में आपको युवाचार्य पद से अभिषिक्त किया गया। आप व्यसनमुक्ति के प्रबल प्रेरक व आपकी सद्प्रेरणा से लाखों लोग कुव्यसनों का त्याग कर सद्मार्ग की ओर अग्रसर हुए हैं। आपश्रीजी ने भारत के राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, मध्यप्रदेश, गुजरात, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, उड़ीसा, झारखण्ड, पश्चिमी बंगाल एवं आन्ध्रप्रदेश आदि प्रांतों में विचरण कर जिनशासन की भव्य प्रभावना की, अभी तक आपने १९८ दीक्षा प्रदान कर तिन्नाणं और तारियाणं के पद को सार्थक किया है। साधुमार्गी संघ के इतिहास में प्रथम बार आपने एक साथ छः मुमुक्षु भाईयों को दीक्षा प्रदान कर नवइतिहास का सृजन किया है।

आप मुनिरूप में मासखमण करने वाले साधुमार्गी संघ के प्रथम आचार्य हैं। विसं. २०५६ कार्तिक कृष्णा तृतीया को उदयपुर में आप हुक्मसंघ के नवम् पाट पर आचार्य के रूप में आरूढ़ हुए। आपश्री हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत-अपभ्रंश आदि भाषाओं के साथ-साथ जैन एवं जैनेत्तर दर्शनों के भी विशेष ज्ञाता हैं। संयम के प्रति हर पल सजगता व जागरूकता आपके जीवन के रोम-रोम में विशेष रूप से समाहित है। कथनी और करनी में एकरूपता व आडम्बर रहित जीवन आपके प्रमुख गुण हैं। आपके प्रवचन की पावन श्रृंखला 'रामेश उवाच' के रूप में साहित्यिक जगत् में विशेष स्थान रखती है। श्रावक-श्राविकाओं में धार्मिक क्रियाओं के प्रति सजगता को आप अत्यन्त महत्त्वपूर्ण मानते हैं। श्रावक-श्राविकाओं की आपने नवतत्त्व, बारह व्रत व लघुदण्डक थोकड़े सीखने हेतु आह्वान किया, आपके आह्वान से प्रेरित होकर देश भर के हजारों श्रावक-श्राविकाओं ने इस आह्वान को सार्थक किया।

चतुर्विध संघ में क्रिया तथा ज्ञानार्जन के प्रति आशातीत वृद्धि को पाकर हार्दिक प्रमोद होता है। बावरी जाति के हजारों लोगों को प्रतिबोधित कर उन्हें सिरीवाल जैन के नाम से संबोधित कर आप 'सिरीवाल प्रतिबोधक' के रूप में विख्यात हुए। चतुर्विध संघ की बागडोर संभालने के पश्चात् व्यसनमुक्ति, संस्कार निर्माण वर्ष, समता स्वाध्याय वर्ष, संस्कार समीक्षा सुधार वर्ष, संघ समर्पणा वर्ष, उपासना विशुद्धि वर्ष, श्रमणोपासक वर्ष, ज्ञानचेतना वर्ष, आत्मनिर्भर वर्ष, ज्ञान आराधना वर्ष, प्रदान कर आपने संघ को नये आयाम प्रदान किये, ऐसे युगपुरुष को शत्-शत् वन्दन-अभिवन्दन, आपके ५०वें दीक्षा दिवस फरवरी २०२५ को समस्त जैन समाज की घोषित एकमात्र विश्वस्तरीय पत्रिका 'जिनागम' परिवार करता है।

भारत को 'भारत' ही बोला जाए
INDIA नहीं
'एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

आचार्य राम जी म.सा. को प्राप्त युवाचार्य पद

फाल्गुन शुक्ल ३, संवत २०४८, तद्नुसार ७ मार्च १९९२

प्रायः देखा गया है कि किसी भी धर्म के संस्थापक एवं धर्म प्रवर्तक महापुरूष के निर्वाण अथवा देहावसान के पश्चात् उनके संघ अथवा सम्प्रदाय में नेतृत्व के प्रश्न को लेकर बिखराव होना प्रारंभ हो जाता है, कभी-कभी यह बिखराव ऐसे महापुरुषों के जीवनकाल में भी हो जाता है, जैन संघ भी बिखराव की इस प्रक्रिया से विलग नहीं रह सका है। जैन आगमों का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि नेतृत्व एवं वैचारिक मतभेद की प्रक्रिया तीर्थंकर महावीर के जीवनकाल में ही प्रारंभ हो चुकी थी, जब स्वयं महावीर के जामाता जमालि ने महावीर के संघ से पृथक होकर अपना नया सिद्धान्त बहुतरवाद चलाया। स्मृतिशेष आचार्य श्री नानालालजी म.सा. को भी अपने जीवनकाल में ही अपने ही कतिपय शिष्यों को उस समय संघ से निष्कासित/बहिर्भूत करना पड़ा, जब उन्होंने युवाचार्य के चयन का निर्णय लिया।

समता विभूति आचार्य-प्रवर श्री नानेश ने अपनी प्रखर प्रतिभा से अपने समस्त शिष्यों में से सर्वाधिक योग्य तरुण तपस्वी, सेवाभावी, आगम मर्मज्ञ, व्यसनमुक्ति के प्रेरक मुनि श्री रामलालजी म.सा. को थार की मरुभूमि, मानव सभ्यता की उषाकाल की साक्षी, सारस्वत सभ्यता का हृदयस्थल, शौर्य, त्याग, बलिदान, विद्या अध्ययन का केन्द्र बिन्दु, सीमा प्रहरी की ऐतिहासिक नगरी 'बीकानेर' के भव्य दूर्ग जूनागढ के राजप्रसाद में फाल्गुन शुक्ला ३, सं. २०४८ तदनुसार ७ मार्च, १९९२ को गौरव गरिमामण्डित श्रीसंघ के एक और नायक का चयन कर इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठ पर आचार्य सुधर्मा के ८२वें पट्टधर के रूप में युवाचार्य रूपी धवल चादर प्रदान की, जिसे मुनि श्री रामेश ने गुरू आज्ञा के रूप में स्वीकार किया।

सन् १९९२ से १९९५ तक आचार्यश्री के इस निर्णय को लेकर शिष्यों में कोई मतभेद दृष्टिगोचर नहीं हुआ, किन्तु सन् १९९६ में आचार्यश्री के ही कतिपय शिष्य नेतृत्व की महत्त्वाकांक्षा को लेकर संघ से निष्कासित/बर्हिगमित हो गए।

संघ में हुए इस घटनाक्रम से आंशिक ऊहापोह की स्थिति होना स्वाभाविक था, किन्तु जीवन के अंतिम पड़ाव में आचार्य श्री नानेश ने उस स्थिति का समतापूर्वक न केवल सामना किया, वरन् संघ को स्थिरता प्रदान की। आचार्य श्री नानेश द्वारा चयनित युवाचार्य श्री रामेश ने अपनी प्रखर प्रतिभा और दृढ क्रिया के आधार पर साधुमार्गी जैन संघ को जो ऊँचाइयाँ प्रदान की और अनवरत कर भी रहे हैं, आप श्लांघनीय है। कहा जा सकता है कि आचार्य श्री नानेश का युवाचार्य के रूप में मुनि श्री रामलालजी म.सा. का चयन सर्वाधिक सार्थक एवं सम्यक निर्णय था।

आचार्य श्री नानेश के महाप्रयाण के पश्चात् कार्तिक बदी ३ वि.सं. २०५६ को युवाचार्य श्री रामेश को उदयपुर में आचार्य पद की चादर ओढाई गई। आचार्य श्री रामेश ने अपने पूर्ववर्ती आचार्यों का अनुसरण करते हुए संघ एवं जिनशासन की गरिमा में जो अभिवृद्धि की है तथा अनवरत कर रहे हैं, वह श्लांघनीय है।

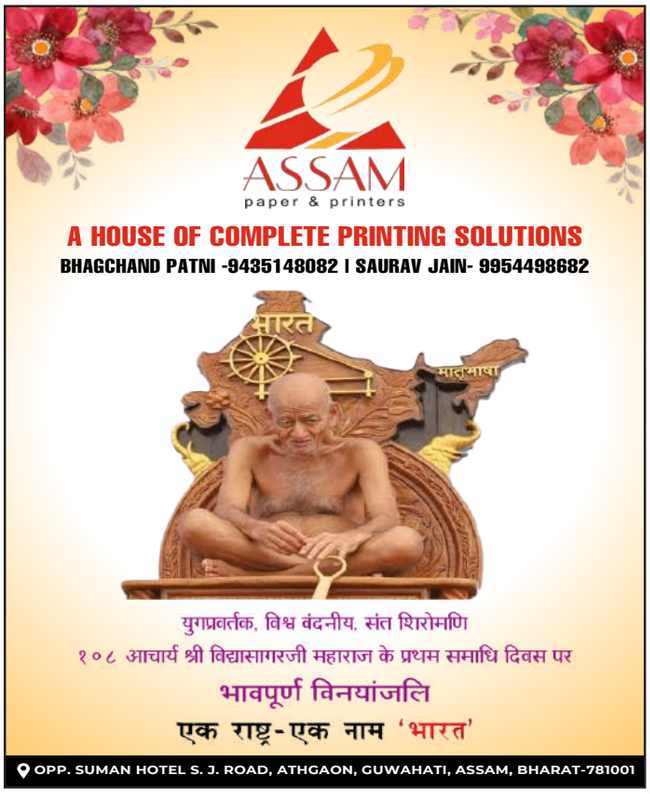

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

'मुक्ति' हेतु चाहिए भगवान महावीर की अंगुली

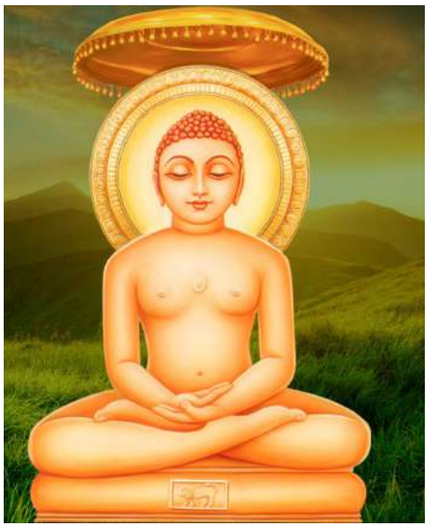

भगवान महावीर ने जितने महान संदेश दिए उतना ही महान जीवन भी जिया इसी कारण वे कभी आउट ऑफ डेट नहीं हो सकते। महावीर को पढ़ा और सुना जाए तो मन पवित्र होता है और उनके संदेशों को जिया जाए तो जीवन धन्य होता है। इसलिए महावीर जैन नहीं जिन थे। वे केवल जैनों के नहीं वरन सम्पूर्ण मानवता के भगवान हैं। अगर उनके अंहिसा, अनेकांत, समता, समानता, सहयोग जैसे संदेशों को विश्वभर में फैला दिया जाए तो विश्व मैत्री और विश्व शांति का सपना शीघ्र साकार हो सकता है। महावीर शब्द की व्याख्या करें तो पता चलेगा कि महावीर का 'म' महादेव का, 'ह' हनुमान का 'व' विष्णु का व 'र' राम का वाचक है। महावीर का नाम लेने से चारों महापुरूषों को एक साथ प्रणाम हो जाता है। हमें महावीर का नाम 'म' महान बनने, 'ह' हिम्मत न हारने 'व' वचन निभाने और 'र' राग-द्वेष से मुक्त होने की प्रेरणा देता है। जैसे राम ने रावण का ओर कृष्ण ने कंस का संहार किया वैसे ही वर्द्धमान ने क्रोध और कषाय के कंस का एवं राग द्वेष के रावण का अंत कर वीरों के वीर महावीर बन गए।

महात्मा गांधी भारत के राष्ट्रपिता हैं, पर भगवान महावीर भारत के प्राण हैं क्योंकि गांधी ने महावीर द्वारा प्रदत्त अहिंसा के अस्त्र से ही भारत को आजादी दिलवाई थी। महावीर के अनुयायियों इस बात को सदैव ध्यान रखें कि नेता को वोट, अमीर को नोट और आगे बढ़ने वालों को सपोर्ट चाहिए, पर महावीर को केवल आपकी खोट चाहिए। उन्हें वैभव चढ़ाने के बजाय अपनी बुरी आदतें चढाएँ ताकि आपका जीवन निर्मल और पवित्र बन सके। आज के युग में महावीर चाहते है। कि हम दूसरों के जीवन में आग लगाने की बजाए बाग लगाएँ। किसी विद्यालय, अनाथालय, वृद्धाश्रम, हॉस्पिटल में कमरा बनाएँ, परन्तु इसके साथ ही किसी अपाहिज को व्हीलचेयर दिलाएं, छोटी-सी प्याऊ खोल दें, किसी को अच्छी पुस्तक पढ़ने के लिए दे दें, एक पेड़ लगा दें, ये भी न कर सकें तो ऐसी अच्छी बातों को दूसरों को बता दें, महावीर खुश हो जाएँगे।

भगवान महावीर ने कहा है कि संत के दो धर्म हैं ज्ञान और ध्यान और गृहस्थ के दो धर्म हैं दान और पूजा। हर व्यक्ति जीवन में दान देने की आदत डाले। चाहे थोड़ा ही दो,पर हर रोज दो। जो करना है अपने हाथों से करके जाना। कल का कोई भरोसा नहीं है और हमारे पीछे हमारे नाम पर दान-पुण्य होगा इस बात पर भी भरोसा मत करना। भगवान महावीर हैं कि इंसान मेरे मंदिर में नशा नहीं चढ़ाता तो फिर भीतर जीते-जागते भगवान को नशा क्यों चढ़ा देता है। याद रखना, जिनके खान-पान का कोई पता नहीं होता उनके खानदान का भी कोई पता नहीं होता।

एक महिला शराबी पति का पत्नी बनने की बजाय विधवा बनना ज्यादा पसंद करेगी क्योंकि शराबी के साथ रहने की बजाय विधवा रहने में ज्यादा सुख है। बहिनों को चाहिए कि जब तक घर व्यसनमुक्त न हो जाए तब तक चुपचाप न बैठें। अभिभावक बच्चों को कार से पहले संस्कार दें। अगर हम महावीर से प्रेम करते हैं तो अहिंसा को फिर से जीवित करने का संकल्प लें। परदों पर अहिंसा के संदेश लिखने की बजाय जीवन में अहिंसा लाए।

- विजयराज सुराणा
९८६८८०७६८

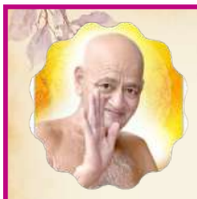

युगप्रवर्तक, विश्व वंदनीय, संत शिरोमणि
१०८ आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के प्रथम
समाधि दिवस पर भावपूर्ण विनयांजलि।

Smt Surajdevi Patni & Family

Resi.: 103, Brighton Hari Om Nagar, Mulund East,
Mumbai, Maharashtra, Bharat-400081

भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

आचार्यश्री जी

युगप्रवर्तक, विश्व वंदनीय, संत शिरोमणि
१०८ आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के
प्रथम समाधि दिवस पर भावपूर्ण विनयांजलि।

Ashok Kumar Churiwal
Mob. : 9435124862

Mission Road, Ward Number 3,
P .O . Barpeta Road, Assam, Bharat- 781315

भारत को भारत ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

सारा जमाना पदम जैन का दीवाना

हजारों परिवारों को रिश्तों में जोड़ने वाले पदमचंद जैन का हर कोई दीवाना

वैवाहिक दुनिया के बेताज बादशाह के रूप में सुप्रतिष्ठित पदमचंद जैन की आज दुनिया दीवानी है। दुनिया जिन उद्योगपतियों, फिल्मी सितारों की दीवानी है, वे सारे पदमचंद जैन के दीवाने है। और हो भी क्यों नहीं? आखिर देशभर में अब तक नामी-गिरामी परिवारों को आपस में वैवाहिक रिश्तों में जोड़ने का कीर्तिमान जो स्थापित किया है। जयपुर में एक शादी के आयोजन में जीतो के श्रेष्ठीवर्य से मुलाकात हुई। इनमें तारक मेहता का उल्टा चश्मा के फेम शैलेष लोढा, शेयर मार्केट के दिग्गज मोतीलाल ओसवाल, प्रमुख बिल्डर सुभाष रूणवाल, सेलो ग्रुप के प्रदीप राठौड, इन्स्पीरा के प्रकाश जैन, डॉ. सुरेन्द्र जैन युएसए, प्रकाश कानुगो, तेजराज गुलेच्छा, किशोर खाबिया, राकेश मेहता, शांतिलाल कवाड़, संदिप बाफना सहित अनेक दिग्गजों से मुलाकात हुई। पदमचंद जैन ने अपनी चिर परिचित शैली में सभी का आत्मीय स्वागत किया। रूणवाल परिवार में वैवाहिक आयोजन के अवसर पर परिवार को बधाई दी। पूरे भारत में ओसवाल जैन बच्चों के वैवाहिक बायोडेटा के लिए पदमचंद जैन एक जाना-माना नाम है। राजनीति, प्रशासनिक, समाजसेवी, ब्यूरोक्रेटस उद्योगपति, सहित हर क्लास परिवार के बच्चों के बायोडेटा उपलब्ध है। सच में इतनी दीवानगी देखी नहीं कहीं। हर जुबां पर पदमचंद जैन का नाम।

▪ आपके सपनों को पूरा करने वाली टीम ▪

आईजेवीओ यानी पदम परिवार की यह टीम आपके बच्चों के लिए तलाशती हैं एक-से-बढ़कर एक सुंदर रिश्तों वाला बायोडाटा

दुल्हन वही जो पिया मन भाए, बहु वही जो सास मन भाए

रिश्तों के बेताज बादशाह **पदमचंद जैन**

।। श्री पार्श्वनाथाय नमः ।।

रिश्तों का मंडप आई जे वी ओ

विश्वस्तरीय ओसवाल-दिगम्बर जैन एवं वैश्य समुदाय के 8 हजार से अधिक वैवाहिक रिश्ते करवाने का गौरवशाली कीर्तिमान स्थापित

9314510196 / 9602623456

FCP JITO
पदमचंद जैन

प्रोफेशनल, सीए, पायलट इंजीनियर, आईएएस, आईपीएस, आरएएस, फिल्म, राजनैतिक क्षेत्र के अलावा हर वर्ग और क्षेत्र में कार्यरत युवा-युवतियों के लिए जांचे परखे वैवाहिक रिश्तों का खजाना

1 जून से 2000 से सतत आपकी सेवा में तत्पर

IJ VO

जैन - वैश्य वैवाहिक रिश्तों का आखिरी पड़ाव

एक छत के नीचे उपलब्ध सेवाएं

वैवाहिक-रोजगार, छात्रवृत्ति, विधवा पेंशन, मेडिकल हेल्प, प्रशासनिक एवं कानूनी सलाह, धार्मिक एवं सामाजिक क्षेत्र में सदैव अग्रणी सहयोगी

इंटरनेशनल जैन एवं वैश्य ऑर्गनाइजेशन

1662-बी, ए.पी. अपार्टमेंट, मोतीडूंगरी रोड, जयपुर-04

फोन : 0141-2602626

अपनों से हो अपनों का रिश्ता

इस केन्द्र की स्थापना से लेकर अब तक लगभग 50 हजार से अधिक वैवाहिक रिश्तों के बायोडेटा आ चुके हैं और निरंतर वृद्धि हो रही है। इस केन्द्र के कम्प्यूटर पीड बायोडेटा में बड़ी आसानी से मनवांछित रिश्ते के लिए बायोडेटा पलक झपकते ही उपलब्ध हो जाते हैं। देश में आज इतना बड़ा नेटवर्क कहीं देखने को नहीं मिलता जहां सभी बायोडेटा वेरीफाईड हो अर्थात प्रत्येक बायोडेटा की पूर्ण सूक्ष्मता से जांच की जाती है, उसके बाद ही बायोडेटा प्रोसेस में अग्रेषित होते हैं। इस केन्द्र में देश-विदेश के जैन-वैश्य समुदाय के हर क्षेत्र के युवक-युवतियों के वैवाहिक बायोडेटा उपलब्ध हैं। भारतीय प्रशासनिक सेवा हो, सी.ए. हो, आई पीएस हो या राजनीति, समाजसेवा के क्षेत्र से हो, देश का ख्यातनाम औद्योगिक घराना हो या फिर मीडिया हो या फिल्मी क्षेत्र हर क्षेत्र के युवक-युवतियों के बायोडेटा का नायाब खजाना है। संकोच नहीं, सम्पर्क करें : पदमचंद जैन -

सेवा के सरोकार
छात्रवृत्ति
मेडिकल शिक्षा
रोजगार
विधवा पेंशन

उक्त आवेदकों की जानकारी पूरी तरह से गोपनीय रखी जाती है।

अशोक सिरोया (अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष) | चंद्रराज सिंघवी (राष्ट्रीय अध्यक्ष) | डॉ. प्रकाश गोलेछा (योजना मंत्री) | नरेन्द्र कुमार जैन (राष्ट्रीय अध्यक्ष, यू.सि) | बसंत जैन (राष्ट्रीय संघटन मंत्री) | संजय जैन (कोर्डिनेटर) | सुरेन्द्र कुमार जैन (राष्ट्रीय प्रचार मंत्री)

सेवा के पथ पर अग्रसर टीम आईजेवीओ

1662-बी, ए.पी. अपार्टमेंट, वैभव लॉन के पास, हनुमान मंदिर के सामने, मोतीडूंगरी रोड, जयपुर-04

फोन : 0141-2602626 / 4010196 email: neerapadamjain@gmail.com

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मेरे आदर्श, चलते फिरते तीर्थंकर मुझे अकेला छोड़ गए

- बिजय कुमार जैन, वरिष्ठ पत्रकार व संपादक, राष्ट्रीय अध्यक्ष मैं भारत हूँ फाउंडेशन

चंद्रगिरी-डोंगरगढ़: दिगम्बर समुदाय के जैनाचार्य १०८ श्री विद्यासागर महाराज के समाधि लेने पर भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ भारत के कई राजनितिज्ञों, वरिष्ठ समाज सेवियों के साथ महाराष्ट्र के राज्यपाल रमेश बैस ने भी शोक जताया था, सभी ने अपने संदेश में कहा कि आचार्य विद्यासागरजी महाराज जी का जीवन ज्ञान प्राप्ति, कठोर तपस्या और आत्म-कल्याण के लिए समर्पित था। संस्कृत और प्राकृत भाषाओं के प्रकांड विद्वान विद्यासागर जी महाराज ने जीवन भर उपदेशों,

लेखों और कविताओं के माध्यम से जनता को प्रबुद्ध किया और उन्हें आत्म-सुधार का मार्ग दिखाया, एक महान राष्ट्रीय संत और समाज सुधारक का गोलोक गमन हो गया, उनके विचार हमेशा लोगों को बेहतर जीवन जीने के लिए मार्गदर्शक साबित हुए, 'जिनागम' परिवार जैन आचार्य के समाधि लेने पर भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित किया। आचार्य श्री के समाधि लेने का समाचार फैलते ही भारत भर के दिगम्बर जैन समाज के श्रद्धालुओं और भक्तों में शोक व्याप्त हो गया था। श्रावक श्रेष्ठि अशोक पाटनी किशनगढ़, प्रभात जैन मुंबई, राजा भैया सूरत, अतुल सराफ पूना, विनोद बड़जात्या रायपुर, प्रमोद जैन 'कोयला' भोपाल,

वरिष्ठ पत्रकार व संपादक बिजय कुमार जैन मुंबई-कोलकाता, चंद्रगिरी तीर्थक्षेत्र कमेटी से किशोर जैन, चंद्रकांत जैन, सुधीर जैन आदि ने अपनी विनयांजली अर्पित की थी।

चलते-फिरते तीर्थंकर...

५६ सालों में १.२५ लाख किमी से अधिक चले थे आचार्यश्री

आचार्यश्री विद्यासागर जी ने १९६८ में दीक्षा ली, इसके बाद १.२५ लाख किलोमीटर से भी ज्यादा पैदल चले, ऐसे में देखा जाए तो आचार्य श्री हर रोज औसतन ६.११ किलोमीटर पैदल चले, इस जानकारी की पुष्टि अचित सागर महाराजजी ने की। मेडिसिन स्पेशलिस्ट डॉ. योगेंद्र श्रीवास्तव के अनुसार आचार्य श्री नियमों का पालन करने वाले थे, उनका खानपान बेहद सीमित था, वे तेल, चीनी और नमक तक का सेवन नहीं करते थे, ऐसे में भी उनका स्वास्थ्य अच्छा था, जैसे आचार-विचार और नियम संयम होता है, वैसा ही शरीर भी ढल जाता है, वैसे भी रोज पैदल चलने से आपकी क्षमता में बढ़ोतरी होती है, जैसे कोई व्यक्ति पहले एक दिन में पांच किलोमीटर ही पैदल चलकर थक जाता है, लेकिन वह रोज पांच किलोमीटर पैदल चले तो धीरे-धीरे उसकी पैदल चलने की क्षमता बढ़ती जाती है। चूंकि आचार्यश्री सालों से पैदल विहार करते रहे, निश्चित ही इससे उनके पैदल चलने की क्षमता में बढ़ोतरी होती रही।

आचार्यश्री के मुंह से निकला ॐ
सिर हल्का सा झुका और महासमाधि में लीन हो गए

१७ फरवरी रात २:३५ बजे आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज ने डोंगरगढ़ स्थित चंद्रगिरी तीर्थ क्षेत्र में महासमाधि में प्रवेश करने से पहले सिर्फ 'ॐ' शब्द कहा, सिर हल्का सा झुका और महासमाधि में ॐ शब्द के साथ लीन हो गए। महासमाधि के पहले आचार्यश्री को भी इस बात का अहसास हो गया था कि इस भूमंडल में उनका समय पूरा हो गया है, एक दिन सबको यहां से रवाना होना ही है, इसलिए वे हमेशा जैन श्रावकों को कहते थे, भगवान का नाम लेते रहो। मृत्यु को मोक्ष उत्सव के रूप में लेना चाहिए उन्होंने आखिरी समय में कहा कि उनके गुरु इंतजार कर रहे हैं, उनके पास जाने का समय आ गया है।

सम्पूर्ण भारत में चौका नहीं लगा, जैन संतों ने रखा निर्जला उपवास

आचार्यश्री की महासमाधि के अवसर पर भारत भर **शेष पृष्ठ २१ पर...**

INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
INDIA GATE का नाम
Remove INDIA Name From The Constitution
'भारतद्वार' लिखवायें

युगप्रवर्तक, विश्व वंदनीय, संत शिरोमणि १०८ आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के प्रथम समाधि दिवस पर भावपूर्ण विनयांजलि।

श्री सुनील पहाड़िया-श्रीमती नीना पहाड़िया
(पूर्व अध्यक्ष दिगम्बर जैन मंदिर, थडी मार्केट, अग्रवाल फार्म मानसरोवर)
महामंत्री धर्म जागृति संस्थान राजस्थान प्रांत
निवासः 999/४२३ अग्रवाल फार्म, मानसरोवर, जयपुर, राजस्थान- ३०२०२०
मो. 93149-95657, 93148-85657
भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

श्वेताम्बर जैन दिगम्बर
९ फरवरी देशनोक माघ सुदि बारस
आचार्य भगवंत युगपुरूष रामलाल जी म.सा. के दीक्षा दिवस ९ फरवरी पर कोटि-कोटि नमन
हुशि उ चौ श्री ज ग ना ना
राम चमक रहे भानु समाना
गौतम गणेशमल दुग्गड़ मो. 7000763232
उत्तम गणेशमल दुग्गड़ मो. 700386947
ओसवाल कॉम्पलेक्स, नये गुरूद्वारे के पास, पो. मनेन्द्रगढ़, जि. एमसीबी, छत्तीसगढ, भारत-४९७४४२
एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

पृष्ठ २० से... में जहां जैन प्रतिष्ठान बंद रहे, वहीं पूरे देश में विहार कर रहे मुनिश्री सहित सभी जैन संतों ने निर्जला उपवास रखा। बच्चों ने एकासन व्रत किया। कई जैन साधकों के घरों में चूल्हा नहीं जला, इसके अलावा टीवी पर ही कई लोग आचार्यश्री का अंतिम संस्कार देखते रहे, इस दौरान मप्र., राजस्थान से कई लोग डोंगरगढ़ के लिए भी रवाना हो गए, भक्तों की आंखों में आंसू नहीं थम रहे थे।

चातुर्मास सात राज्यों में किए, सबसे ज्यादा मप्र. में...

आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज ने सात राज्यों में चातुर्मास किए, लेकिन इस दौरान सबसे ज्यादा चातुर्मास मध्यप्रदेश में किए, उन्होंने राजस्थान में ७ चातुर्मास किए, उत्तरप्रदेश में १, मध्यप्रदेश में ३७, बिहार (वर्तमान में झारखंड) में १, महाराष्ट्र में ६, गुजरात में १ और छत्तीसगढ़ में ३ चातुर्मास किए, जहां भी वे चातुर्मास करते, वहां अनुयायियों का मेला लग जाता, सबको संयम, तप और त्याग की शिक्षा आचार्यश्री देते थे।

कविता का शौक, कुछ सालों से जापानी कविता लिख रहे थे...

आचार्यश्री पिछले कुछ सालों से जापानी हायकू (कविता) लिख रहे थे। हायकू जापानी छंद की कविता होती है, जिसमें पहली पंक्ति में ५ अक्षर, दूसरी में ७ और तीसरी में ५ अक्षर होते हैं, संक्षेप में सारगर्भित बहु अर्थ को प्रकट करने वाली होती है। आचार्यश्री ने ६०० से ज्यादा हायकू लिखे हैं। आचार्यश्री की ज्योतिष, दर्शन और आध्यात्मिक क्षेत्रों में भी काफी रुचि थी। आचार्य श्री के जीवन की एकमात्र इच्छा रही कि भारत की एक राष्ट्रभाषा 'हिंदी' बने, साथ ही भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए INDIA नहीं, आचार्य श्री की यह इच्छापूर्ति को पूर्ण करने का प्रण आचार्य श्री विद्यासागर जी के शिष्य वरिष्ठ पत्रकार व संपादक बिजय कुमार जैन ने संकल्प के साथ लिया है। **- जिनागम**

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

आचार्य सन्मति सागर महाराज तपस्वी सम्राट समता के धनी थे

अच्छे लगते हैं गुरूजन तब,जब वो हमारे बीच से गुजर जाते हैं

-अन्तर्मना आचार्य प्रसन्न सागर जी म.सा.

आचार्य प्रसन्न सागरजी महाराज की कुलचाराम से बद्रीनाथ अहिंसा संस्कार पदयात्रा चल रही है, विहार के दौरान प्रवचन में कहा की

अच्छे लगते हैं गुरू जन तब, जब वो हमारे बीच से गुजर जाते हैं..

इसलिए संत बनकर नहीं, साधक बनकर रहो, संत एक दिन विदा हो जाते हैं, लेकिन साधक दिल में बसे रहते हैं।

सत्य को साक्षी मानकर जीने के अभ्यासी थे तपस्वी सम्राट कड़वे सच को मधुर औषधि बनाकर भक्त जन को दवा देने के अच्छे अभ्यासी थे, तपस्वी सम्राट नारिकेल के स्वभावतः जीने के अभ्यासी थे, तपस्वी सम्राट शीशू सा निश्छल जीवन जीने के अभ्यासी थे, तपस्वी सम्राट मधुर मुस्कान से भक्त जन को अपना बनाकर, अपने में जीने के अभ्यासी थे, तपस्वी सम्राट अन्तरंग, बहिरंग, परिग्रह से मुक्त होकर जीने के अभ्यासी थे, तपस्वी सम्राट श्रमण साधना के महासूर्य बनकर जीये, जिसे युग ने तपस्वी सम्राट

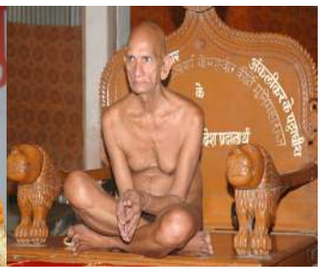

आचार्य श्री सन्मति सागरजी महाराज के रूप में पूजा, आराधा और वे मोक्ष मार्गियों के बन गये तप आदर्श।

मुनि कुंजर अंकलीकर आचार्य श्री आदि सागरजी महाराज के तृतीय पट्टाचार्य श्री सन्मति सागरजी महाराज का माघ सुदी सप्तमी, संवत् १९९५ तदनुसार सन् १९३९ में एटा जिले के फफोतू ग्राम में जन्म हुआ। माँ जयमाला देवी, पिता प्यारेलाल जी थे। आपके तीन भाई, पांच बहिनों

के बीच, बड़े लाड-प्यार से बचपन बीता। बचपन का नाम ओम प्रकाश था। आचार्य श्री महावीर कीर्ति जी से १८ वर्ष की उम्र में ब्रह्मचर्य व्रत लेकर आजीवन नमक का त्याग कर दिया। आचार्य श्री विमल सागरजी महाराज से छुल्लक दीक्षा ली और नाम मिला क्षुल्लक नेमी सागर महाराज। २४ वर्ष की अल्पवय में मुनि दीक्षा हुई और कार्तिक शुक्ल द्वादशी संवत् २०१९, सन् १९६२ में तीर्थराज सम्मेद शिखर में मुनि सन्मति सागर महाराज बन गये। आचार्य महावीर कीर्ति गुरूदेव ने माघ वदी तृतीया वि. सं २०२९, ०३ जनवरी १९७२, मेहसाणा में अपनी समाधि से तीन दिन पूर्व अपना आचार्य पद सन्मति सागर को देकर बना दिया आचार्य सन्मति सागर महाराज।

तपस्वी सम्राट समता के धनी थे, जीव मात्र के प्रति करूणा से ओतप्रोत रहते थे, छोटे-बड़े, गरीब-अमीर के भेदभाव से मुक्त थे, शास्त्रों की परायणता ने आपमें कूट-कूट कर विद्वता भर दी थी। आप सिद्धान्त, न्याय, व्याकरण, काव्य, छन्द, अलंकार, ज्योतिष, वास्तु, आयुर्वेद, मन्त्र-शास्त्र, आदि अनेक विद्याओं के उद्भट विद्वान थे, परन्तु रंचमात्र भी ज्ञान का अहंकार आपको स्पर्श नहीं कर पाया।

तपस्वी सम्राट निष्काम योगी थे, सर्वोत्कृष्ट आत्म आनंद के सागर में अवगाहन कर, सरस्वती की साधना में लीन होकर, संस्कृति की सुरक्षा के प्रेरणास्रोत रहे। आपने प्रचण्ड पुरूषार्थ के प्रवर्तन से, आत्म सिद्धि के स्वर्णिम राजपथ पर करते रहे सदैव आरोहण और समस्त विभ्रमों को, निंद्रा को हरा कर, शरीर की प्राकृतिक क्रियाओं पर नियंत्रण करते हुए, स्वानुशासन के सतत् अभ्यासी आचार्य प्रवर, सामायिक, प्रतिक्रमण और स्वाध्याय से कभी भी समझौता नहीं किया।

तपस्वी सम्राट ने जिन दीक्षा के बाद लगभग २५० से ज्यादा साधु- साध्वियों को मोक्ष मार्ग पर प्रवृत्त किया, आपने अपना आचार्य पद मुनि सुनील सागरजी को देकर आर्ष परम्परा को जीवन्त कर दिया।

आपकी ८७ वीं जन्म जयन्ती पर अनन्त शुभसंशाओं सहित समस्त जिन पंथों की एकमात्र पत्रिका 'जिनागम' परिवार अनन्त प्रणाम निवेदित करता है।

- नरेंद्र अजमेरा, पियुष कासलीवाल, औरंगाबाद

जय पावन जय महावीर जय निसर्ग
वर्तमान को वर्धमान की जरुरत है
वर्तमान को 'जैन एकता' की जरुरत है
Vaibhav Jain
Mob: 7303771151
Vaibhav Products
213 Ram Vihar, Suraj Mal Vihar, Delhi, Bharat-110092
एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
INDIA GATE का नाम
Remove INDIA Name From The Constitution
'भारतद्वार' लिखवायें
जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

भगवान महावीर की शिक्षाओं ने समाजसेवा के लिए प्रेरित किया

- सी.पी. राधाकृष्णन, राज्यपाल, महाराष्ट्र राज्य

मुंबई: राजभवन मुंबई के दरबार हॉल में २५५०वें महावीर स्वामी निर्वाणोत्सव निबंध प्रतियोगिता का पुरस्कार वितरण समारोह संपन्न हुआ। महाराष्ट्र राज्य के राज्यपाल सी.पी. राधाकृष्णन और कैबिनेट मंत्री मंगल प्रभात लोढा ने छात्रों को पुरस्कार प्रदान किए, इस अवसर पर मलकापुर विधानसभा क्षेत्र के विधायक चैनसुख संचेती, शिक्षक, अभिभावक और छात्र-छात्राएं उपस्थित थे। राज्यपाल सी. पी. राधाकृष्णन ने तीर्थंकर महावीर की शिक्षाओं को आगे बढ़ानेवाली पहल की विशेष रूप से सराहना की, उन्होंने कहा कि महावीर की शिक्षाओं ने हमें समाजसेवा के लिए प्रेरित किया है, प्रतियोगिता में लाखों छात्र-छात्राओं ने भाग लिया, ज्यादा से ज्यादा छात्र महावीर का संदेश सीखेंगे तो समाज में शांति और अहिंसा का मार्ग मजबूत होगा, उन्होंने सभी प्रतियोगियों और विजेताओं को बधाई दी।

मंत्री मंगलप्रभात लोढा ने कहा कि यह बहुत गर्व की बात है कि समारोह राजभवन के दरबार हॉल में आयोजित किया जा रहा है, उन्होंने कहा कि इसके लिए मैं राज्यपाल महोदय को धन्यवाद देता हूं, हम सभी केंद्र में नरेंद्र मोदी और महाराष्ट्र में देवेंद्र फडणवीस के नेतृत्व में आपके साथ हैं। यह सरकार के साथ काम करने का एक शानदार अवसर है, अगर हम सभी एक साथ आएं तो हम अपने देश के लिए उल्लेखनीय योगदान दे सकते हैं, यह प्रतियोगिता राज्य सरकार और महावीर स्वामी २५५० निर्वाण कल्याणक महोत्सव समिति के सहयोग से राज्य भर में आयोजित की गई थी। राज्यस्तरीय प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। प्रथम पुरस्कार विजेता छत्रपति संभाजीनगर की आराध्य लोढा, द्वितीय पुरस्कार विजेता नांदेड़ के अक्षय ढेरे और तृतीय पुरस्कार विजेता यवतमाल की शरवरी भोजनकर रहे। इसके अलावा कक्षा ५वीं से ७वीं तक के छात्रों ने लाखों रुपए के पुरस्कार भी जीते। निबंध लेखन प्रतियोगिता को १६ लाख से अधिक छात्रों से जबरदस्त प्रतिक्रिया मिली, जबकि १०,००० से अधिक स्कूलों ने भाग लिया, यह पहल महाराष्ट्र में सफल रही, गुजरात और राजस्थान राज्यों ने भी इसे लागू करने की पहल की गई है। मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने भी पत्र के जरिये इस प्रतियोगिता की सराहना की है।

इस पहल के सफल कार्यान्वयन के लिए नासिक, नागपुर और कोल्हापुर जिलों के कलेक्टरों, जिला परिषदों के सीईओ और नगर आयुक्तों को भी सम्मानित किया गया। जय महावीर! जय भारत!

युगप्रवर्तक, विश्व वंदनीय, संत शिरोमणि
१०८ आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के प्रथम समाधि दिवस पर
भावपूर्ण विनयांजलि।

Rohit Patny
Mob: 9820540490
1804, A-Wing, Rustomje Oriana, M.I.G Colony, Behind M.I.G Cricket Club, Near Mhada Office, Bandra East, Mumbai, Maharashtra, Bharat - 400051
email: rohitpatny@hotmail.com
'एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

युगप्रवर्तक, विश्व वंदनीय, संत शिरोमणि
१०८ आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के प्रथम समाधि दिवस पर
भावपूर्ण विनयांजलि

Subodh Chand Bohra
Sameer Bohra
Sharp Metal Printers Pvt. Ltd.
612, Janki Centre, 6Th Floor, Off Veera Desai Road, Andheri West, Mumbai, Maharashtra, Bharat - 400053
email: sc_bohra@hotmail.com / Mob.: 9821047440
'एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

पत्रकार महासंघ द्वारा आयोजित गोष्ठी संपन्न
श्री महावीर जी में बनेगा भारत का सर्वश्रेष्ठ पेनोरमा

जयपुर: 'जैन पत्रकार महासंघ' के तत्वावधान में २९ जनवरी प्रातः १०:३० बजे 'जैन पत्रकार महासंघ' के राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश जैन तिजारिया की अध्यक्षता में श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी के अध्यक्ष सुधांशु कासलीवाल के मुख्य आतित्य में बड़जात्या सभागार भट्टारकजी की नसियां नारायण सिंह सर्किल में जैन पत्रकारों की विचार गोष्ठी सफलता के साथ सम्पन हुई। जैन पत्रकार महासंघ के राष्ट्रीय महामंत्री उदयभान जैन ने अवगत कराया कि राजस्थान सरकार ने नौ स्थानों पर पेनोरमा का निर्माण कराए जाने की घोषणा की गई थी, जिसके अंतर्गत एक पैनोरमा श्री महावीर जी में निर्माण होगा, इसके अन्तर्गत गोष्ठी में मुख्य अतिथि सुधांशु कासलीवाल ने पत्रकारों के समक्ष पूर्ण रूपरेखा रखी, उन्होंने कहा कि राज्य सरकार की पैनोरमा निर्माण के लिए श्री महावीर जी में प्रबंध समिति की ओर से भूमि भी चिन्नित कर दी गई है, उन्होंने कहा कि यह पैनोरमा सरकार व महावीर जी क्षेत्र के सहयोग से जैन संस्कृति, देव, शास्त्र व गुरुओं पर आधारित भारत का सर्वश्रेष्ठ आधुनिक पैनोरमा होगा, इस संबंध में पत्रकारों ने अपने-अपने विचार रखे, इसके संबंध में निर्णय हुआ कि एक सप्ताह के अंदर लिखित में 'जैन पत्रकार महासंघ' के माध्यम से सुझाव प्रस्तुत किये जायें। कासलीवाल ने महावीर जी व जयपुर में श्रीमहावीरजी क्षेत्र द्वारा कराई जा रही योजनाओं के संबंध में भी पत्रकारों को अवगत कराया। गोष्ठी में राजस्थान सरकार से आदिनाथ जन्म कल्याणक एवं भारत सरकार द्वारा प्रत्येक राज्य में महावीर जन्म कल्याणक पर सार्वजनिक अवकाश घोषित हो, जिस पर चर्चा हुई और निर्णय हुआ कि इस संबंध में राजस्थान व भारत सरकार से सम्पर्क कर प्रभावी कार्रवाई की जाएगी। अध्यक्षीय उद्बोधन में रमेश जैन तिजारिया ने कहा कि पत्रकार महासंघ तीर्थ क्षेत्रों, जैन संस्कृति आदि व पत्रकारों के हित में अनेकों कार्य कर रहा है, आप महासंघ की प्रत्येक योजनाओं में सहयोग प्रदान करें और महासंघ से जुड़ें, इस अवसर पर डा. अनिल जैन, दिलीप जैन, महेंद्र बैराडी, हीराचंद वैद, संजय बड़जात्या, राकेश गोदिका, चक्रेश जैन, राकेश गोधा आदि ने पेनोरमा, श्रीमहावीरजी के हुए विकास कार्यों, जैन समाज व धर्म के सम्बन्ध में अपने-अपने विचार रखे। गोष्ठी में पीयूष जैन, राजेंद्र जैन वैद, दीपक गोधा, अमन जैन कोटखावदा, राजा बाबू जैन गोधा, राजेंद्र कासलीवाल, विमल बज, नेमीचंद जैन आदि उपस्थित थे। गोष्ठी का संचालन राष्ट्रीय महामंत्री उदयभान जैन ने किया, अंत में पत्रकार महासंघ द्वारा प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ के मोक्ष कल्याणक के अवसर पर उत्तर प्रदेश के बड़ौत शहर में दर्दनाक हादसे से ७ श्रावकों की मृत्यु होने पर दुःख व्यक्त किया गया, नौ बार णमोकार मंत्र बोलकर व मौन रखकर श्रद्धांजलि दी गई।

- उदयभान जैन

VALUE COUNTER MODEL - KM 9014A
UPDATES WITH NEW NOTES

FEATURES :
- Automatic start, stop and clear.
- With Batch, Add and Self-checking functions.
- UV, MG, IR and MT counterfeit detection.
- Automatic half-note, chained note detecting.
- Double-note detecting with IR.
- LCD turns red when detects fake note.

SPECIFICATIONS :
- Counting Display : 4 digits
- Batch Display : 3 digits
- Counting speed : 1000pcs/min
- Hopper Capacity : 300 notes
- Stacker Capacity : 200 notes
- Size of countable note : 50*110-90*190mm
- Power Supply : AC220V±10% 50Hz
- Power Consumption : ≤ 80W
- Size of box : 375*333*251 mm

KUSAM-MECO®
An ISO 9001:2015 Company
Shop No. 18, 1st floor, CIDCO Shopping Complex, Plot No 9, Sector-7, Rajiv Gandhi Marg, Sanpada,Navimumbai-400705, INDIA. Tel.: 022-27754546, 27750662 / 0292
Email :sales@kusam-meco.co.in Web : www.kusamelectrical.com

भारत को 'भारत' ही बोलें
आइये हम सब मिलकर शुरूआत करें
जय भारत से...

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

हाय, हैलो छोड़िये, जय जिनेन्द्र बोलिए!

Ideal place for
Marriages, Conferences & Relaxation
Khanvel RESORT SILVASSA
09320023557
09824056861
022-26352635
022-26305555
follow us on:
/thekhanvelresort
/khanvelresort
www.khanvelresort.com
sales@khanvelresort.com

'जैन एकता' से ही होगा जैन समाज का विकास
व बढ़ेगा सम्मान मिल कर कहें हम-सब जैन हैं
Samrat Jewellers SJ
नवग्रह रत्नों के व्यापारी
मणिक, मोती, मूंगा, पन्ना, पुखराज, हीरा,
नीलम गोमेदक, लहसुनिया, नवग्रह रत्न अपनी राशी के
अनुसार रत्न धारण करने से हर समस्या दूर होकर,
स्वास्थ लाभ, समुद्र शाली, व हर क्षेत्र
में सफलता प्राप्त होती है
हमारे यहां सभी राशियों के रत्न हमेशा उपलब्ध रहते हैं
एक बार अवश्य संपर्क करें
अनोखीलाल नाहर जैन पंकज नाहर जैन
३१ - ए कीर्तीकर मार्केट, दादर (पश्चिम), मुम्बई,
महाराष्ट्र, भारत - ४०००२८ फोन ०२२-२४३०६६४२
मो: ९८९२८०५०६९

'जैन एकता' से ही होगा जैन समाज का विकास
व बढ़ेगा सम्मान मिल कर कहें हम-सब जैन हैं
भंवरलाल पगारिया जैन
वरीष्ठ उपाध्यक्ष
अ.भा. श्वे.स्था. जैन कॉन्फ्रेन्स, कर्नाटक शाखा
भूतपूर्व अध्यक्ष
अ.भा. श्वे.स्था. जैन कॉन्फ्रेन्स, कर्नाटक शाखा
कार्यकारिणी सदस्य
अ.भा.श्वे.स्था. जैन कॉन्फ्रेन्स, दिल्ली
मुख्य मार्गदर्शक
श्री मरुधर केसरी जैन गुरु सेवा समिति, बैंगलोर
37, हॉस्पीटल रोड, बेंगलोर, कर्नाटक, भारत- 560053
फोन :- 080 22383557 मो. - 09448238429

!! जय गुरु नाना !! !! जय महावीर !! !! जय गुरु राम !!
राम चमक रहे भानु समाना
प्रातः स्मरणीय, युग निर्माता प्रतिपल वंदनीय, परमपुज्य आचार्य प्रवर श्री रामलाल जी म.सा. के दीक्षा दिवस (९ फरवरी) माघ सुदि बारस पर कोटि-कोटि वंदन!
गौतम, चंचल सुराणा
Mob.: 9431229206 / 9471603393
अरिहंत ड्रेसेज
श्री कृष्ण मार्केट, 1 मंजिल, शिव मंदिर चौक
बूरा बजार, कटिहार, बिहार, भारत-854105
एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

'अहिंसा' और 'जैन एकता' हेतु सदा समर्पित
'जिनागम' यूं ही होती रहे पुष्पित-पल्लवित
R.C Bothra
Mob: 9937480939/ 7205066610
एक पेड़ एक ज़िंदगी
BALAJI CHEMICALS & MONOLITHICS
Manufacturer of Bed Material, Fire Clay, Castables, Ramming Mass etc.
E-mail: bcm.rcb@rediffmail.com
COOKING COL L. E
Manufacturer of Coke Related Products
C -13, Industrial Estate. Rourkela, Odisha, Bharat-769004
Email: shree_weld@rediffmail.com, Website: www.shreeweld.com

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

आचार्य श्री विद्यासागर जी की प्रेरणा से आज भारत विकसीत हो रहा है

जेल में कैद कैदियों की स्थिति देखकर आचार्य श्री का हृदय द्रवित हो उठा तब उन्होंने जेल प्रशासन को प्रेरणा प्रदान दी कि कैदियों को अर्थ पुरूषार्थ का अवसर देना चाहिये।

आचार्य श्री जी की प्रेरणा से केन्द्रीय जेल सागर, तिहाड़ जेल दिल्ली, मिर्जापुर, बनारस, आगरा, मथुरा आदि जेलों में समाज के द्वारा 'हथकरघा' प्रशिक्षण प्रारंभ किया गया। भारत का पशुधन सुरक्षित रहे, गौहत्या बंद हो, इस हेतु आचार्य प्रवर की मांगलिक प्रेरणा से 'दयोदय पशु संवर्धन' के नाम से शताधिक गौशालायें पूरे 'भारत' देश में स्थापित हैं।

भारत में भारतीय शिक्ष पद्धति लागू हो, अतः अंग्रेजी नहीं, भारतीय भाषा में व्यवहार हो, ये प्रेरणा देने के साथ-साथ आचार्य प्रवर ने 'इंडिया नहीं भारत बोलो' का नारा 'भारत' की जनता को प्रदान किया।

संक्षेप में आचार्य श्री जी की प्रेरणा से अनेक विशिष्ट कार्य किये गये, जिसमें शिक्षा के क्षेत्र प्रतिभास्थली, चिकित्सा के क्षेत्र में भाग्योदय एवं पूर्णायु, अहिंसक रोजगार एवं स्वावलंबी जीवन जीने हेतु हथकरघा 'हस्त शिल्प' पिछड़े एवं गरीब वर्ग को आजीविका प्राप्त हो सके, मैत्री के नाम से लघु कुटीर उद्योग शुद्ध एवं पौष्टिक अनाज एवं फल सब्जी प्राप्त हो सके, इस हेतु जैविक खेती की प्रेरणा दी, संप्रदायवाद से दूर आचार्य श्री जी ने सदैव राष्ट्र धर्म को ही प्रमुखता प्रदान की।

कलयुग के कमल राष्ट्रीय विचार सम्प्रेरक और सम्पोषक के रूप में प्रसिद्ध राष्ट्रीय संत आचार्य श्री विद्यासागर जी ने अपने उदस्त विचारों से अपनी निर्मल वाणी और अपने श्रेष्ठ कार्यों से भारतीय संस्कृति को ऊँचाई प्रदान की, किसी भी देश की रीढ़ वहाँ की शिक्षा एवं चिकित्सा पद्धति होती है। शिक्षा के क्षेत्र में आचार्य श्री जी की प्रेरणा से भारत के पाँच राज्यों, जिसमें जबलपुर (म.प्र.), इन्दौर (म.प्र.), रामटेक (महाराष्ट्र), ललितपुर (उ.प्र.) एवं डोंगरगढ़ (छ.ग.) ज्ञानोदय विद्यापीठ प्रतिभास्थली के नाम से कन्या छात्रावास के साथ विद्यालय, शिक्षा के साथ संस्कारों का शंखनाद, के उद्देश्य से विद्यालय स्थापित किये गये, इन विद्यालयों में अध्ययन कराने वाली सभी शिक्षिकायें आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत से अलंकृत हैं।

प्रतिभा प्रतीक्षा इंदौर, प्रतिभा चयन इंदौर एवं जयपुर, आगरा, पूणे,

हैदराबाद, भोपाल आदि में छात्रावास स्थापित किये गये, छात्र-छात्रायें प्रशासनिक परीक्षा की तैयारी कर सके, इस हेतु जबलपुर, भोपाल एवं दिल्ली में अनुशासन प्रशासनिक प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना आचार्य श्री जी की प्रेरणा का ही सुफल है। चिकित्सा के क्षेत्र में भाग्योदय तीर्थ धर्मार्थ चिकित्सालय की स्थापना आचार्य श्री की मांगलिक प्रेरणा से सागर (म.प्र.) में हुई, जिसका उद्देश्य गरीब एवं मध्यम वर्ग, जो चिकित्सा से वंचित रह जाता है, उन्हें समुचित चिकित्सा उपलब्ध होती रहे।

जबलपुर (म.प्र.) में भारतीय शिक्षा पद्धति आयुर्वेद संरक्षण संवर्धन हेतु पूर्णायु आयुर्वेदिक चिकित्सालय एवं महाविद्यालय की स्थापना हुई। विदेशी कम्पनियों के भ्रमजाल से 'भारत' मुक्त रहे और सभी जीव सुख-शांति चैन अमन से जी सके, 'जिओ और जीने दो' के सिद्धान्त को चरितार्थ करने के लिए स्वदेशी और अहिंसक रोजगार को प्रोत्साहित करते हुए आचार्य भगवन ने लघु उद्योग के रूप में पूरी मैत्री, जबलपुर में हथकरघा प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना, पाँचों प्रतिभास्थली के साथ बीनाबारह, कुण्डलपुर, मण्डला, गुना, अशोकनगर, भोपाल, आरोन आदि स्थानों में की, ऐसे आचार्य श्री! जिन्हें वरिष्ठ पत्रकार व संपादक, आचार्य श्री को चलते-फिरते तीर्थंकर बोलने वाले, 'भारत को 'भारत' ही बोलें, 'एक राष्ट्र-एक नाम भारत' 'हिंदी' राष्ट्रभाषा बनें का आर्तनाद करने वाले बिजय कुमार जैन आचार्य श्री विद्यासागर जी के चरणों में नमन होते हैं।

आचार्य विद्यासागर महाराज का प्रथम समाधि स्मृति दिवस धुलियान में

धुलियान, मुर्शिदाबाद, पश्चिम बंगाल: ०६ फरवरी २०२५ गुरुवार को संत शिरोमणी आचार्य श्री १०८ विद्यासागर जी महामुनिराज के प्रथम समाधि स्मृति दिवस के उपलक्ष्य में श्री मंदिरजी में सामूहिक रूप से नित्य नैमित्तिक पूजा एवं आचार्य गुरुवर विद्यासागरजी महामुनि राज की पूजा श्री मंदिर जी में भक्ति के साथ किया गया, शाम को ७ बजे श्री मंदिर जी में सामूहिक रूप से आरती में सभी सदस्य अपने अपने घर से दीपक लेकर आए एवम सभी दीपक श्री मंदिर जी में एक साथ जलाए गये। आरती के पश्चात आचार्य श्री गुणगान हुआ व आचार्य श्री का चालीसा पाठ हुआ अंत में आचार्य श्री की एक माला की जाप किया गया।

- संजय कुमार बड़जात्या जैन
धुलियान, प.बंगाल, भारत

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

हुशिउचौश्रीजगनाना
राम चमक रहे भानु समाना

९ फरवरी देशनोक माघ सुदि बारस

राम गुरू का है संदेश व्यसन मुक्त हो सारा देश
राम गुरू विराट है दीक्षाओं का ठाठ है
संयम इनका सख्त है तभी तो लाखों भक्त है

मोहनचंद सरला बाफना
Mob: 9425505015

ओसवाल ट्रेडिंग कम्पनी

5, टैक्सटाइल मार्केट, पंडरी, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत- 492004
मो: 9424205015

आचार्य भगवंत युगपुरूष रामलाल जी म.सा. के दीक्षा दिवस ९ फरवरी पर कोटि-कोटि नमन
राम चमक रहे भानु समाना

Ashok Lunawat
Mob : 9393108516
Ravi Lunawat
Mob : 9525859999

Jai & Co.

27, 3-12, Dykes Tank Road, Near Sri Kanthi Theatre,
Visakhapatnam, Andhra Pradesh, Bharat - 530002
email: ravilunawat3590@gmail.co
Ph.: 0891-2732191
'एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

आचार्य पुष्पदंत जी के द्वारा ११ दिसंबर दिक्षा प्राप्ति

दिगंबर जैन मुनि पुलक सागर

आचार्य विद्यासागर जी के द्वारा २७ जनवरी ब्रह्मचर्य पालन

Vimal Jain
Mob: 9820402573
Vipul Arts

Shop No. 24, World Trade Center,
Cuffe Parade, Mumbai, Maharashtra, Bharat-400005
दूरध्वनि: 022-22181624, Fax: 022-22182419
अणुडाक: vimaljainwtc@gmail.com
'एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

सम्यक् आराधक
गुरू रामेश

- प्रिया कर्नावट, अजमेर

अपने आराध्य आचार्य भगवन् के चरणों में अपने मन की भावनाओं को समर्पित करने का स्वर्णिम अवसर प्राप्त कर मैं धन्य हो गई हूँ। मैं जो मानव भव जी रही हूँ उसमें गुरु की दिव्यदृष्टि ने प्राण डाले हैं। मेरे जीवन में आचार्य भगवन् की इतनी कृपा रही है, जिसे मैं शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकती। हमारे आचार्यदेव करुणा के महासागर हैं, जिनको पाकर हम धन्य हो गए हैं। कौन कहता है कि इस पंचम आरे में सुख नहीं, यह तो दुःखों से भरा हुआ है। एक दृष्टि से तो यह कथन सत्य ही है, किंतु हम बहुत ही भाग्यशाली हैं जो इस दुःखम आरे में भी हमें ऐसी सम्यक् आराधना करने वाले महान गुरु मिले हैं, जब भी गुरु को वंदन करती हूँ तो मन बार-बार यही कहता है -

घने पेड़ की छाँव में, धूप कहाँ टिक पाएगी।
जब साथ हो गुरु राम का, तो हर मुश्किल आसान हो जाएगी।।

मेरे गुरु उस घने पेड़ की तरह हैं, जिनकी छाँव तले हमेशा मन प्रसन्न रहता है। आचार्य भगवन् अपने उद्बोधन में प्रायः सरलता और सहनशीलता को बढ़ाने का आह्वान करते हैं, जिसके पास जो वस्तु होती है प्रायः वही उसके व्यक्तित्व व ज्ञान में झलकती है। हमारे गुरुवर सरलता, सहिष्णुता व सहनशीलता की साक्षात् मूरत हैं। एक साधक की साधना ही उसकी शक्ति होती है और हमारे आचार्य भगवन् की यह शक्ति सूर्य की भाँति चारों दिशाओं में अध्यात्म की ज्योति फैला रही है। फूलों की खुशबू की तरह यह साधना रूपी महक हर एक आत्मा को महका रही है, उनकी शरण में आने वाला कोई भी जन इससे अछूता नहीं रहा।

प्रत्येक साधक का जीवन कई मुश्किलों से गुजरता है, जो 'अभिरामम्' पुस्तक पढ़कर हमें महसूस भी हो गया। आचार्य श्री हुक्मीचंद जी म.सा. की गादी को वर्तमान आचार्य भगवन् ने अपने अदम्य साहस व कठोर संयम साधना से और अधिक पावन व निर्मल बना दिया है। आचार्य भगवन् के दर्शन होते ही मन गद्गद् हो जाता है और एक ही ध्वनि गूँजती है-

हुशि उचौ श्री जग नाना, राम चमकते भानु समाना।

आचार्य भगवन् की दीक्षा महोत्सव का यह स्वर्णिम साल उनकी शिक्षाओं पर चलने के लिए हम सबको प्रेरित कर रहा है। आपश्री अपनी साधना व चिंतन द्वारा हम सभी को संयमित व सुश्रावक रूपी जीवन जीने एवं कषायों को पतला करने की प्रेरणा दे रहे हैं। 'धम्म सद्धा चालीसा' का एक-एक शब्द आचार्यदेव ने इतना सुंदर पिरोया है, जिसे पढ़कर मन में धर्मघोष होने लगता है। 'धम्म सद्धा चालीसा' केवल एक प्रार्थना नहीं अपितु इसका प्रत्येक शब्द मोती के समान है, जिसे भगवन् ने एक सूत्र में चालीसा के रूप में पिरोया है, यह उनकी अंतरात्मा से निकला वह सत्य है जिससे भगवन् हमें एक प्रेरणा, एक उद्बोधन दे रहे हैं, इसे हम जितना भावपूर्वक आचरण करेंगे उतना ही भगवन् को अपने नजदीक पाएँगे।

जिनेश्वर देव से यही प्रार्थना है कि मेरे गुरु सदा स्वस्थ रहें, मस्त रहें, अलमस्त रहें।

मेरे गुरुवर हैं सबसे निराले, जिनशासन के ये ध्रुव तारे।
कर रहे हैं ये शासन प्रभावना, शुद्ध संयम पाले वीर पथ पर चले।।
गुरुवर स्वस्थ रहें, अलमस्त रहें।
आठों याम प्रभु से यही प्रार्थना, हम हर पल भावें यही भावना।।

अशोक पाटनी को धर्म महासंरक्षक की उपाधि

श्री क्षेत्र अरिहंत गिरी तमिलनाडु के भट्टारक चिंतामणि स्वस्तिश्री धवल कीर्ति स्वामी जी के द्वारा देव शास्त्र गुरु के प्रति गहरी आस्था रखने वाले एवं देश भर में भामाशाह कहे जाने वाले परम मुनि भक्त, समाजसेवी श्रावकरत्न अशोक पाटनी जैन आर.के. मार्बल को 'धर्ममहा संरक्षक' की उपाधि से सम्मानित किया गया। अशोक जी अपनी धर्मपत्नी श्राविका रत्न श्रीमती सुशीला जैन के साथ तमिलनाडु यात्रा के दौरान श्री क्षेत्र अरिहंत गिरी, जहां पर २००० वर्ष प्राचीन श्री नेमिनाथ की विशाल प्रतिमा के दर्शन कर मस्तकाभिषेक किया, प्राचीन महान आचार्य श्री समंतभद्र स्वामी के चरण चिह्न के दर्शन किए, क्षेत्र में नवनिर्मित सिद्धि जिन मंदिरों में नवग्रह के नव तीर्थंकरों का अभिषेक किया।

परम पूज्य स्वस्ति श्री धवल कीर्ति स्वामी जी के सान्निध्य में श्री अशोक जी ने अपना जन्म दिवस नए रूप में मनाया। क्षेत्र में चल रहे चेन्नई निवासी समाजसेवी दानवीर महेंद्र-सरिता जैन द्वारा स्कूल के ८०० से भी अधिक बच्चों को लड्डू वितरित किया गया, भट्टारक शक्ति श्री स्वस्ति श्री धवल कीर्ति स्वामी जी ने उन्हें क्षेत्र में 'धर्म महासंरक्षक' की उपाधि से अलंकृत किया, उन्होंने क्षेत्र में गुरुकुल के बच्चों के लिए राशि का भी अनुदान किया एवं क्षेत्र के विकास पर चर्चा करते हुए परम पूज्य स्वामी जी ने अशोक जी से क्षेत्र में मुनि निवास के निर्माण की अपेक्षा करते हुए क्षेत्र में इसकी अति आवश्यकता से अवगत कराया।

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
INDIA GATE का नाम
Remove INDIA Name From The Constitution
'भारतद्वार' लिखवायें

युगप्रवर्तक, विश्व वंदनीय, संत शिरोमणि
१०८ आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के
प्रथम समाधि दिवस पर
भावपूर्ण विनयांजलि।

Pankaj Jain
Mob : 9987111110

Padma Jain
Mob : 9821312450

FRAGOMATRIX

3rd Floor, Plot No.43, 6th N.S Road, JVPD, Juhu,
Vile Parle West, Mumbai, Maharashtra, Bharat-400058
email: hindoil@vsnl.com

एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

युगप्रवर्तक, विश्व वंदनीय, संत शिरोमणि
१०८ आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के
प्रथम समाधि दिवस पर
भावपूर्ण विनयांजलि।

Vikrant Patni
Mob. : 9322341847

Ashi Diamond

Resi.: Sundarban Off Link Road., 502, A Wing, Om Apartment,
Andheri West, Mumbai, Maharashtra, Bharat-400053

Off. : FE 3013, Bharat Diamond, Bkc Road,
Bandra Kurla Complex-Bandra East,
Mumbai, Maharashtra, Bharat - 400051
email: vikrantpatni@yahoo.in

'एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

कल्पद्रुम महामंडल में बैठकर किया पूजन ईक्षित फलदायी होता है

- मुनिश्री 108 विनम्र सागर जी म.सा.

इंदौर: कल्पद्रुम महामंडल विधान ऐसा विधान है, जिसमें बैठकर आप जो चाहो वह प्राप्त कर सकते हो। विधान साधकों की साधना का प्रतिफल जरूर देता है। गुरुदेव आचार्य विद्यासागर जी महाराज कहते थे कि इस जहां से आसमां तक और आसमां से लेकर लामका, (भगवान के मकान) तक, जो देख सकता है जहाँ तक वो पा सकता है वहां तक, श्री १००८ कल्पद्रुम महामंडल विधान ऐसा ही विधान है इसमें जो भी श्रावक व श्राविका मनोकामना मांगते हैं वह यह विधान से पूर्ण हो जाती है। कल्पद्रुम महाविधान में किया पूजन ईक्षित फलदायी होता है। उक्त विचार संत शिरोमणि आचार्य विद्यासागर महाराज के प्रथम समाधि तिथि पर आचार्यश्री १०८ समय सागर महाराज की आज्ञानुसार मुनिश्री १०८ विनम्र सागर महाराज ने महावीर नगर ग्राउंड पर आयोजित कल्पद्रुम महामंडल विधान की महत्ता बताते हुए श्रावक श्राविकाओं को धर्मसभा में संबोधित करते हुए व्यक्त किए।

मुनिश्री विनम्र सागर महाराज ने समग्र दिगम्बर समाज एवं श्रीसंघों ने मिलकर गुरूवार ६ फरवरी को आचार्यश्री विद्यासागर महाराज की समाधि दिवस सामूहिक रूप से मनाया, उन्होंने समाज के युवाओं से भी इस गुणानुवाद सभा में आचार्यश्री को विनयांजलि अर्पित की। दयोदय फाउंडेशन चेरिटेबल ट्रस्ट एवं कल्पद्रुम महामंडल विधान महोत्सव समिति संरक्षक राजेश उदावत, अध्यक्ष राहुल जैन (स्पोर्ट्स वर्ल्ड), मनीष नायक एवं मीडिया प्रभारी राजीव जैन के अनुसार महामंडल विधान के चतुर्थ दिवस पर सुबह के सत्र में मुनिश्री के सान्निध्य एवं विधानाचार्य ब्रह्मचारी अनिल भैया, डॉ. अभिषेक जैन एवं डॉ. आशीष जैन के निर्देशन में शांतिधारा व पूजन की विधियां संपन्न की गई।

इंद-इंद्राणियों ने कल्पद्रुम विधान के निमित्त १४४ अर्घ्य समर्पित किए, षष्टम, सप्तम व अष्टम भूमि की विधियां संपन्न करने के साथ ही अर्घ्य चढ़ाए गए। विधानाचार्य ने बताया कि चार दिनों में इंद्र-इंद्राणियों द्वारा ४५० अर्घ्य समर्पित किए गए। सात दिवसीय आयोजन के दौरान १६९५ अर्घ्य समर्पित किए गए। गुरूवार ६ फरवरी को आचार्यश्री विद्यासागर महाराज का समाधि दिवस एकसाथ एकसमय पर पूरे देश में मनाया गया। महावीर नगर ग्राउंड पर भी १४० से अधिक जिनालयों के अध्यक्षों के साथ सभी श्रीसंघ उपस्थित रहे।

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

युवा समाजसेवी, गौ सेवक कार्य सम्राट बैंगलुरू निवासी महेंद्र मुणोत के कार्यों की झलकियां

मेवाड़ जैन संस्था द्वारा बेंगलूरु पैलेस मैदान के प्रिंसेज श्राइन सभागार में आयोजित मेवाड़ उत्सव कार्यक्रम में युवा समाजसेवी विशिष्ट अतिथि महेन्द्र मुणोत को सम्मानित करते हुए मेवाड़ जैन संस्था के अनिल पोखरना एवं अन्य सदस्य।

विष्णुवर्धन सेवा समिति द्वारा गणतंत्र दिवस के उपलक्ष में राजाजीनगर राम मंदिर के निकट आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि महेंद्र मुणोत ने ध्वजारोहण कर मां भारती के चित्र पर पुष्प अर्पित कर शहीदों को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए अपने वक्तव्य में कहा कि आज ही के दिन देश में संविधान लागू हुआ था, संविधान की बदौलत ही हमें समानता का अधिकार मिला, संविधान की बदौलत ही 'भारत' में विकास हो रहा है, हमें अपने संविधान पर गर्व है, संविधान का सम्मान करना प्रती नागरिक का कर्तव्य है। आयोजकों ने श्री मुणोत को सम्मानित किया।

रॉयल टाइगर श्री चामुंडेश्वरी गेलेयारा बलेगा रामचंद्रपुरम द्वारा आयोजित अन्नम्मा देवी पूजा महोत्सव कार्यक्रम में युवा समाजसेवी मुख्य अतिथि महेन्द्र मुणोत ने देवी मां के दर्शन कर आशीर्वाद लिया एवं अन्नदान कार्यक्रम में सेवा प्रदान की। आयोजकों ने श्री मुणोत को सम्मानित किया।

अखिल कर्नाटक पूर्व सैनिक संघ एवं प्रिया कृष्णा फाउंडेशन ट्रस्ट के संयुक्त तत्वाधान में भारतीय सेना दिवस के उपलक्ष में गोविंदराज नगर स्थित कबड्डी खेल मैदान में राज्य स्तरीय कबड्डी प्रतियोगिता आर्मी कप का आयोजन किया गया। विजयनगर क्षेत्र के विधायक एम. कृष्णप्पा एवं गोविंद राज नगर क्षेत्र के विधायक प्रिया कृष्णा ने दीप प्रज्ज्वलन से कार्यक्रम का शुभारंभ किया। आर्मी कप के समापन समारोह में युवा समाजसेवी विद्यार्थी मित्र मुख्य अतिथि महेन्द्र मुणोत एवं संघ के अध्यक्ष शिवण्णा ने विजेता टीम रॉयल कबड्डी क्लब एवं विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया।

राज न्यूज़ एवं राज म्यूजिक के संयुक्त तत्वाधान में बेंगलुरु माउंट कार्मल कॉलेज खेल मैदान में आयोजित क्रिकेट स्पर्धा राज प्रीमियर लीग कार्यक्रम में मुख्य अतिथि महेंद्र मुणोत ने खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन करते हुए अपने वक्तव्य में कहा 'खेल को खेल की भावना से खेलें'। आयोजकों ने श्री मुणोत को सम्मानित किया।

श्री शनेश्वर स्वामी देवस्थान होसा गुडदहल्ली में आयोजित वार्षिक उत्सव कार्यक्रम में युवा समाजसेवी विद्यार्थी मित्र विशिष्ट अतिथि महेन्द्र मुणोत ने शनि भगवान के दर्शन कर आशीर्वाद लिया एवं बच्चों में शिक्षण सामग्री वितरित की। आयोजकों ने श्री मुणोत को सम्मानित किया।

युगप्रवर्तक, विश्व वंदनीय, संत शिरोमणि १०८ आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के प्रथम समाधि दिवस पर भावपूर्ण विनयांजलि

A GROUP OF
MMC
ESTD. 1950
DIAMOND JUBILEE YEAR
75 MAKUM MOTORS
MAKUM MOTORS (Makum)
H.O. : Tulsiram Road, P.O. TINSUKIA - 786 125
Tel. : 9435035781
IndianOil
Assam Oil

MAKUM MOTORS (Makum)
P.O. MAKUM JN.-786 170
Tel. : 9435527418
Dealer : I.O.C. Ltd. (A.O.D.)

MAKUM MOTORS (Ledo)
LEDO - 786 170
Tel. : 9435527199
Dealer : I.O.C. Ltd. (A.O.D.)

DIAMOND JUBILEE YEAR

V2J LUBRICANTS
Tulsiram Road, TINSUKIA - 786 125
Tel. : 9435736367
SERVO
WORLD CLASS LUBRICANTS

SHANTI AUTO SERVICE
Jayanagar, DULIAJAN - 786 602
Tel. : 6026176425
Dealer : I.O.C. Ltd.

JAINCO TEA (P) LIMITED
RATANPUR, DIBRUGARH

MAKANTONG TEA COMPANY
BORDUMSA

युग पुरूष आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के दीक्षा दिवस पर कोटि-कोटि वंदन

राम चमक रहे भानु समाना

Sumati Kumar Sethia

Mob.: 9434025002

Sethia Tobacco Company

Deals In All Types Of Raw And Processed Tobacco Leaves

Bara Aatiabari, Near 2 Km Milestone, Dinhata,
Dist. Cooch Behar, West Bengal, Maharashtra, Bharat - 736135

email: sumatisethia4669@gmail.com

'एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

युगप्रवर्तक, विश्व वंदनीय, संत शिरोमणि १०८ आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के प्रथम समाधि दिवस पर भावपूर्ण विनयांजलि।

CA Ambar Kasliwal

Mob:9819096877

A Kasliwal & Company

Chartered Accountants

Specialising in SME IPOs, Startups and Virtual CFO Services

✦✦✦✦

Office Address:
232, Udyog Bhawan Sonawala lane,
Goregoan East, Mumbai, Maharashtra,
Bharat - 400063, Tel: 022-49796877
Email: ambarkasliwal@gmail.com
www.akkasliwal.com

भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

पाषाण युग में भारत

भारत में 'पाषाण युग' मानव इतिहास का वह काल है जब लोग पत्थर के औजारों का इस्तेमाल करते थे, इस काल को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है।

१. पुराना पाषाण युग
२. मध्यपाषाण युग
३. नवपाषाण युग

पाषाण युग में मनुष्य शिकार करता था, खाद्य सामग्री एकत्रित करता था और पत्थर से बनी हुई चीजों का इस्तेमाल करता था।

भारत में पाषाण युग से जुड़े हुए कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य इस प्रकार हैं-

- भारत में पाषाण युग के अवशेष कई स्थानों पर उपलब्ध हुए हैं।
- भारत में पाषाण युग के अवशेष मुख्य तौर पर तमिलनाडु, कर्नाटक, उड़ीसा, राजस्थान और मध्यप्रदेश में मिले हैं।
- भारत में पाषाण युग के अवशेषों से ज्ञात होता है कि लोग नदियों, जलस्रोतों के निकट तथा गुफाओं में रहते थे।
- पाषाण युग में मनुष्य पत्थर के औजारों के अतिरिक्त सींगों, हाथी दांत और लकड़ी से बने हथियारों का प्रयोग करते थे, हस्त कुहार, बिदारनी और कुल्हाड़ी इस इस काल के मुख्य अवजार थे।
- पाषाण युग में मनुष्य ने परिए का आविष्कार किया था, किन्तु उसका उपयोग यातायात के साधन के रूप में नहीं, वरन् बर्तन बनाने के लिये किया जाता था।
- पाषाण युग में मनुष्य ने सुई-धागे का उपयोग करना प्रारम्भ कर दिया था।
- पाषाण काल के लोग मुख्यत: शिकारी एवं खाद्य संग्राहक थे।

पुरानापाषाण काल आधुनिक काल से २५-३० लाख वर्ष पूर्व से लेकर १२००० वर्ष पूर्व तक माना जाता है। प्रागैतिहासिक युग में मानव ने सर्वप्रथम पत्थर के औजार बनाना प्रारम्भ किया था, इस काल में मानव इतिहास का ११% विकास हुआ। मध्यपाषाण युग में मनुष्य ने खेती करना

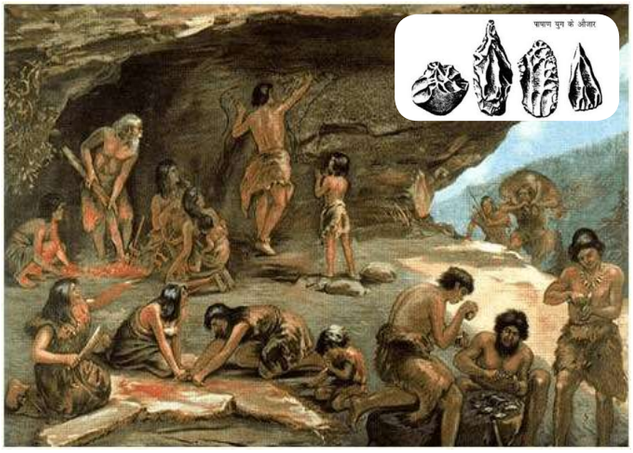

प्रारम्भ कर दिया था। मध्यपाषाण काल १०००० से ४०००० ईस्वी पूर्व माना जाता है, इस काल में पशुपालन की भी शुरूआत हो गई थी, जिसके प्रारम्भिक चिन्ह मध्य प्रदेश और राजस्थान में मिले हैं।

नवपाषाण काल ४००० ई.पू. से १८०० ई.पू. तक माना जाता है।

नव पाषाणकाल को ताम्रपाषाण युग, आत्मनिर्भर खाद्य अर्थव्यवस्था के रूप में भी परिभाषित किया जाता है, नव पाषाण युग की संस्कृति की मुख्य विशेषत: कृषि कार्यों की शुरुआत, पशुपालन, पत्थरों के चिकने औजार और मिट्टी के बर्तनों का निर्माण होता था।

राम चमक रहे भानु समाना
युग पुरूष आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के दीक्षा दिवस ९ फरवरी पर कोटि-कोटि वंदन
C. Sampat Raj, S. Anil Kumar,
A. Ankith Kumar, A. Avyan
Dhoka
Mob : 9448674277
No.23, Subhashith, 4Th Cross, West Link Road, Malleswaram,
Bangalore, Karnataka, Bharat- 560003
(R) (080) 22236770

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

विचार करें, निर्णय करें एवं लोगों को जागरूक करें एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

- हमारे देश का नाम भारत रहना चाहिए या इण्डिया?
- देश का प्राचीन नाम भारत है, अंग्रेजों ने इसे इण्डिया बना दिया।
- भारतीय परम्परा में प्रत्येक नाम का कोई अर्थ होता है, भारत का अर्थ होता है-ज्ञान में रत (प्रवृत्त)। इण्डिया का शब्दिक अर्थ ही नहीं है, जो मिलता भी है वह अपमानित करने वाला है।
- भारत नाम सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यंत प्राचीन है।
- जैन आख्यानों के अनुसार प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव के ज्येष्ठ पुत्र चक्रवर्ती सम्राट भरत के नाम पर हमारे देश का नाम 'भारत' पड़ा।
- मान्यता है कि हस्तिनापुर के राजा दुष्यंत (१५०० ईसवी पूर्व से १२८० पूर्व के मध्य) और शकुंतला के पुत्र चक्रवर्ती सम्राट 'भरत' के नाम पर हमारे देश का नाम भारत पड़ा। सभी वेदों, पुराणों, रामायण, महाभारत आदि प्राचीन ग्रंथों में 'भारत' नाम का उल्लेख मिलता है।
- क्या किसी नाम का भी अनुवाद हो सकता है, नाम Noun होता है, नाम का अनुवाद हो ही नहीं सकता। यदि किसी का नाम हिरालाल है तो क्या उसे अंग्रेजी में Diamond कह सकते हैं? व्याकरण के अनुसार कोई भी नाम किसी भी भाषा में उसी नाम से लिखा अथवा बोला जाता है, जो मूल भाषा में है।
- आनन्द का विषय यह है कि भारत में आयोजित जी-२० सम्मेलन में मा. राष्ट्रपति ने भोजन के निमंत्रण में 'प्रेसिडेंट ऑफ भारत' तथा सम्मेलन में प्राइम मिनिस्टर ऑफ भारत' लिखा था।
- औपनिवेशिक दासता के नाम अनेक देशों ने बदले हैं जैसे-सीलोन का श्रीलंका एवं टर्की का तुर्किये, बर्मा का म्यांमार आदि।
- हमारे देश का इण्डिया एवं भारत, दो नामों के बदले एक नाम केवल 'भारत' होना ही चाहिए।
- अपने कार्यालय के उपयोग की सामग्री जैसे लिफाफा, बिलबुक, लेटर हेड आदि में 'भारत' लिखें।
- 'मैं भारत हूँ फाउंडेशन' अंतर्राष्ट्रीय संस्थान ने 'एक राष्ट्र-एक नाम भारत' के लिए माननीय राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, सांसद, राज्यपाल, मुख्यमंत्री, कुलपति, सामाजिक संस्थाओं आदि पत्राचार किए है।

आइए हम सब संकल्प करें कि किसी से अभियान के समय 'जय भारत' का ही प्रयोग करेंगे और हर दूसरे को जागरूक करेंगे।

जय भारत

-प्रस्तुति बिजय कुमार जैन
वरिष्ठ पत्रकार व संपादक
राष्ट्रीय अध्यक्ष,
मैं भारत हूँ फाउंडेशन
'अंतरर्राष्ट्रीय संस्थान'
मो. ९३२२३०७९०८

लव होम टेम्पल में तीर्थंकर पार्श्वनाथ की प्रतिष्ठा

जोधपुर: राष्ट्र-संत ललितप्रभ महाराज, राष्ट्र-संत चन्द्रप्रभ महाराज एवं मुनि शांतिप्रिय सागर महाराज के सान्निध्य में शोभावतों की ढाणी स्थित 'लव होम' के विशाल परिसर में ३१ जनवरी शुक्रवार को प्रात: ९ से १२.३० बजे तक तीर्थंकर पार्श्वनाथ प्रभु की नयनाभिराम प्रतिमा का प्रतिष्ठा महोत्सव हुआ। इसके साथ ही मंदिर परिसर में देवी पद्मावती माता एवं नाकोडा भैरव देव की प्रतिमा की भी प्रतिष्ठा हुयी, इस अवसर पर प्रतिष्ठा महोत्सव के अन्तर्गत मंदिर परिसर में नवग्रह, दस दिग्पाल एवं अष्ट मंगल का पूजन हुआ, कार्यक्रम में तीनों प्रतिमाओं का १८ अभिषेक, जिसमें विविध प्रकार के सुगन्धित द्रव्य, विविध नदियों के जल एवं पंचामृत से श्रद्धालुजन प्रतिमाओं का अभिषेक किया। प्रतिष्ठा महोत्सव के अन्तर्गत कुंभ स्थापना और दीप स्थापना भी हुयी। मंदिर के निर्माता विजय, अमित विजयवर्गीय, रामाअवतार, चेतन साकुनिया एवं राजेश, सुमित कर्नावट ने सभी श्रद्धालुओं को प्रतिष्ठा महोत्सव में भाग लेने वालों का सम्मान किया।

युगप्रवर्तक, विश्व वंदनीय, संत शिरोमणि
१०८ आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के
प्रथम समाधि दिवस पर भावपूर्ण विनयांजलि।

CA. Shashikant Shantikumar Lohade
Mob: 9820390487
Mumbai: Flower Queen, D-62, Veera Desai Road, Andheri West, Mumbai, Maharashtra Bharat- 400058
Nasik: Eden Heights, 302-303,Gangapur, Nasik-422222
'भारत को 'भारत' ही बोला जाए' 'एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

With Best Compliments

GURU RAJENDRA METALLOYS INDIA PVT LTD

G R METALLOYS PVT LTD

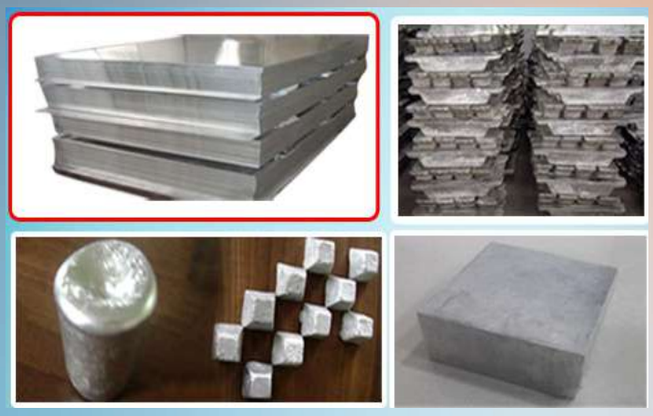

SHAH BABULAL DHANRAJJI JAIN

JAYANT BABULAL JAIN

SHAILESH BABULAL JAIN

Manufactures of Aluminium Alloy Ingot, Aluminium Ingot, Aluminium Notch bar, Aluminium Shots, Aluminium Cubes

8, Gautam Vihar Society, Opp. Sukhsagar Complex, Aroma School Road, Ashram Road, Usmanpura, Ahmedabad, Gujarat , Bharat– 380 013.

जय भारत! जय जिनेन्द्र!

भारत को 'भारत' ही बोलेगें INDIA नहीं

नरेंद्र गांधी जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ
जावद, मध्यप्रदेश प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९४२५१०८२२४

नरेंद्र जी आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के प्रति अपने भावों को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि आचार्य श्री की सबसे बड़ी विशेषता उत्कृष्ट संयम साधना है, उनके दर्शन करते समय उनकी छवि एक निष्काम योगी की तरह प्रतीत होती है। आचार्य श्री के बारे में जितना कहा जाए, उतना कम है, उन्होंने व्यसन मुक्ति और उत्क्रांती का संदेश समाज उद्धार के लिए दिया है, हजारों हजार लोगों ने व्यसन मुक्त होकर एक सही जीवन शैली को चुना है, यह कार्य अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ द्वारा आज भी सुचारू रूप से संचालित है, समता युवा संघ और साधुमर्गी प्रोफेशनल फोरम की प्रवृत्ति 'उत्क्रांति' से हजारों परिवारों ने फिजूल खर्ची और आडंबर, जिस तरह तेजी से बढ़ रहा था, उस पर निश्चित रूप से रोक लगी है, कई संघ समुदायों ने 'उत्क्रांती' को अपनाया है, गांव के गांव 'उत्क्रांती गांव' घोषित हुए हैं, ऐसे ७०० से भी अधिक गांव है जिन्होंने सामाजिक रूप से 'उत्क्रांती' का पालन कर रहे हैं। परिवारों की संख्या तो हजारों में है, ऐसे गुरुवर का मार्गदर्शन समाज व संघ को हमेशा मिलता रहे, यही कामना करते हैं।

आज के युग में 'जैन एकता' की बहुत बड़ी प्रासंगिकता है। तीर्थंकर महावीर स्वामी के सिद्धांतों का सभी को समान रूप से पालन करना चाहिए, तब जाकर हम इस दिशा में आगे बढ़ सकते हैं। तीर्थंकर के अनेकांतवाद और स्यादवाद सिद्धांत का पालन कर हमें एकमंच पर स्थापित होना चाहिए, भले ही सबकी अपनी-अपनी आमनाएं व नियम हैं पर तीर्थंकर महावीर के जो मूल सिद्धांत हैं उसका बड़ी श्रद्धा और निष्ठा से पालन किया जाए, सामूहिकता से रहा जाए तो निश्चित ही 'जैन एकता' की ओर हम अग्रसर हो सकते हैं।

आज की युवा पीढ़ी का अपने धर्म और समाज के प्रति निश्चित रूप से रुझान बढ़ा है, इस दिशा में हम आशावादी हैं। आज की युवा पीढ़ी हमसे ज्यादा तार्किक और प्रासंगिक है, वह परंपरागत रीति-रिवाज से नहीं जुड़ना चाहती, वैज्ञानिकता के आधार पर हम युवाओं को जोड़ सकते हैं, हमारे जैन समाज के सिद्धांत पूरे वैज्ञानिकता पर ही आधारित हैं, इसलिए युवाओं का जुड़ाव अपने धर्म और समाज के प्रति बढ़ रहा है, उन्हें जोड़ने के लिए सर्वप्रथम परिवार, तत्पश्चात पाठशाला और उसके बाद शिविर के माध्यम से उनकी प्रतिभा को निखारने का प्रयास करना चाहिए, युवा संघ व समाज से जुड़ेंगे तो धर्म और समाज के प्रति उनकी निष्ठा बनी रहेगी।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि बिल्कुल अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए, इंडिया नाम परतंत्र की निशानी है, हमारी पहचान 'भारत' से है और 'भारत' नाम से ही रहनी चाहिए। नरेंद्र जी का जन्म और संपूर्ण शिक्षा मध्य प्रदेश के 'जावद' में संपन्न हुई है, यहां आप अधिवक्ता के रूप में कार्यरत हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं, 'नो नेम-नो ब्लेम' के आधार पर अपने कार्यों को करने में विश्वास रखते हैं। वर्तमान में आप अखिल भारतीय साधुमार्गी जैन संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष पद को सुशोभित कर रहे हैं, अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हुए हैं। जय भारत!

- जिनागम

अशोक लुणावत
सचिव साधुमार्गी जैन संघ विशाखापट्टनम
नोखा गांव निवासी-विशाखापट्टनम प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९३९३१०८५१६

अशोक जी आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के प्रति अपने भावों को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि आचार्य श्री का संयमित जीवन और शांत स्वभाव हमें हमेशा ही प्रभावित करता है। आचार्य श्री के दर्शन लाभ लेते समय बाहरी दुनिया पूरी तरह से भूल जाते हैं, सिर्फ आचार्य श्री और उनके प्रवचन ही याद रहते हैं। आचार्य श्री द्वारा दिया गया व्यसन मुक्ति और उत्क्रांती का आयाम समाज हित में तो है ही, साथ ही 'भारत' और विश्व हित में भी है। समाज द्वारा यदि उनके निर्देशों का १०% भी पालन किया जाता है तो समाज को १००% लाभ होता है।

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि जैन समाज द्वारा 'हम दो-हमारे दो' का जो सिद्धांत अपनाया जा रहा है, उससे हमारी जनसंख्या में खतरा आ गया है, आज देश की जनसंख्या में हम मात्र कुछ प्रतिशत ही हैं, यदि हम इसी तरह बंटे रहेंगे तो हमारा समाज का अस्तित्व ही खतरे में आ जाएगा। हमारे आचार्य श्री को भी हमारी घटती जनसंख्या पर कुछ कहना ही चाहिए, जिससे लोगों में जागृति निर्माण हो, दूसरा अंर्तजातीय विवाह भी हमारे समाज के लिए घातक है, यह सब समाज में एकता ना होने के कारण ही संभव हो रहा है, अतः सर्वप्रथम समाज बंधुओं को एकत्रित होना जरूरी है, हम मंदिर बनाते हैं पर उसके रखरखाव की कमी के कारण उसकी व्यवस्था खराब होती जाती है। **शेष पृष्ठ ३६ पर...**

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

पृष्ठ ३५ से ... आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से विमुख हो रही है, इसका कारण उन्हें बचपन से धर्म और समाज से जुड़े रहने की शिक्षा नहीं दी जाती, बच्चों को बचपन से ही धर्म और समाज से जोड़ना व जैन सिद्धांतों की सही जानकारी देना जरूरी है।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि यह बहुत ही अच्छा अभियान है, मैं भी हमेशा इस मुद्दों को उठाते रहता हूं। 'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाना चाहिए', इंडिया हम क्यों बोलते हैं और हिंदुस्तान भी क्यों, हमारी प्राचीन पहचान 'भारत' से है और 'भारत' नाम से ही रहनी चाहिए, चाहे भाषा कोई भी हो?

अशोक जी मूलतः राजस्थान स्थित 'नोखा गांव' के निवासी हैं। आपका जन्म व शिक्षा यहीं संपन्न हुई है, १९८७ में विशाखापट्टनम में बसे हुए हैं और ड्राई फ्रूट्स के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। अखिल भारतीय साधुमार्गी जैन संघ की कार्यसमिति के सदस्य हैं, स्थानीय संघ साधुमार्गी जैन संघ के सचिव पद पर सक्रिय हैं, महावीर इंटरनेशनल से भी जुड़े हैं। जय भारत! **- जिनागम**

दिलीप मेहता

व्यवसायी व समाजसेवी

चित्तौड़गढ़ निवासी-अहमदाबाद प्रवासी

भ्रमणध्वनिः ९३७६११७१७५

दिलीप जी आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के प्रति अपने भावों को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि आचार्य श्री त्याग की प्रतिमूर्ति हैं, उनके दर्शन से आत्मीय शांति प्राप्त होती है। आचार्य श्री द्वारा दिया गया व्यसन मुक्ति और उत्क्रांती का आयाम आज समाज द्वारा किसी न किसी रूप में अपनाने का प्रयास किया जा रहा है।

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि 'जैन एकता' हमारे समाज और आने वाली पीढ़ी के लिए बहुत जरूरी है। युवा पीढ़ी जुड़ेगी तो ही हमारा जैन समाज आगे बढ़ेगा, इसीलिए समाज में 'एकता' होना बहुत जरूरी है।

आज की युवा पीढ़ी को अपने धर्म और समाज से जोड़ना जरूरी है, उन्हें उचित मार्गदर्शन दिया जाए तो वे अवश्य ही अपने धर्म और समाज से जुड़ेंगे, पंथों की कट्टरवादिता को छोड़, एकता के परिपेक्ष को सानिध्य में लेकर युवाओं को जोड़ना चाहिए, तभी युवा वर्ग जुड़ेगा।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए यही हमारे देश की वास्तविक पहचान है।

दिलीप जी मूलतः राजस्थान के चित्तौड़गढ़ में स्थित 'बिनोता' के निवासी हैं। आपका जन्म सम्पूर्ण शिक्षा 'अहमदाबाद' गुजरात में संपन्न हुई है, यहां आप स्टील प्लांट के उद्योग से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। अखिल भारतीय साधुमार्गी जैन संघ के कार्यसमिति सदस्य हैं, लायंस क्लब व जीतो से जुड़े हुए हैं, सकल जैन समाज व मेवाड़ समाज में ट्रस्टी के रूप में कार्यरत है, अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हैं। जय भारत! **- जिनागम**

राजीव सूर्या

पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष समता युवा संघ

उज्जैन निवासी

भ्रमणध्वनिः ९४२५०९२९५१

राजीव जी आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के प्रति अपने भावों को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि आचार्य श्री की त्याग भावना से मैं सबसे अधिक प्रभावित हूं। गुरुदेव के बारे में कहना छोटा मुंह बड़ी बात होगी, दूर से उनके चरणों के दर्शन से ही आत्मा को संतुष्टि प्राप्त होती है। समाज और श्रावकों के उद्धार हैं आचार्य श्री, जिन्होंने व्यसन मुक्ति और उत्क्रांती के आयाम को प्रतिपादित किया, जिस पर आज संपूर्ण समाज अनुसरण कर रहे हैं। आचार्य श्री की देशना से धर्म की प्रभावना बढ़ी है, लोगों की गुरुदेव के प्रति बहुत ही निष्ठा है। गुरुदेव और राजेश मुनि जी के सानिध्य में कई दिक्षाएं हो रही हैं। आचार्य श्री का सानिध्य हमें हमेशा प्राप्त होता रहे यही कामना करता हूं।

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि 'जैन एकता' तो बहुत जरूरी है पर आज जैन समाज के लोग अजैन बनते जा रहे हैं। महावीर के सिद्धांत को भूलते जा रहे हैं, तो हम 'जैन एकता' की बात किस तरह कर सकते हैं, सर्वप्रथम हमें हमारे सिद्धांतों और धर्म से जुड़े रहना बहुत जरूरी है।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से जुड़ी हुई है, उनका रुझान दिन प्रतिदिन बढ़ रहा है, धर्म के प्रति उनका योगदान भी अधिक है।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए।

राजीव जी मूलतः उज्जैन के निवासी हैं, आपका जन्म व शिक्षा उज्जैन में ही संपन्न हुई है, यहां आप कॉपर ब्रास के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक संस्थाओं में भी सक्रिय हैं। उज्जैन समता युवा संघ के अध्यक्ष और अखिल भारतीय समता युवा संघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष भी रहे हैं। अखिल भारतीय साधुमार्गी जैन संघ के कार्य समिति सदस्य हैं, जैन सोशल ग्रुप से जुड़े हुए हैं। आपके पिताजी शांतिलाल जी जैन सोशल ग्रुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष रह चुके हैं। जय भारत! **- जिनागम**

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

सुरेश बच्छावत जैन
राष्ट्रीय महामंत्री श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ
बीकानेर निवासी
भ्रमणध्वनि: ९४६०५८९३२७

सुरेश जी आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के प्रति अपने भावों को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि आचार्य श्री की सबसे बड़ी विशेषता उनकी वाक्पटुता है, उनसे कोई भी प्रश्न कर लिया जाए तो उस प्रश्न का ऐसा उत्तर देंगे, जिससे मन को समाधान प्राप्त होता है। दूसरा उनके संयम शैली और अपने सानिध्य में चारित्रआत्माओं का आपस में तालमेल और संबंध बहुत ही उत्तम है, कम बोलते हैं और हर एक की सुनते हैं। उनके दर्शन करने पर हर बार यही लगता है कि बार-बार उनके दर्शन किया जाए, उनके व्यसन मुक्ति और उत्क्रांति का संदेश दोनों ही समाज के लिए काफी प्रभावशाली हैं, सामाजिक कुरीतियों व फिजूल खर्ची पर, व्यसन मुक्ति का संदेश वर्तमान सरकार द्वारा भी नशा मुक्त भारत के माध्यम से चलाया जा रहा है, जिसकी शुरुआत आचार्य श्री ने कई वर्षों पूर्व ही कर दी थी।
'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि 'एकता' होना तो बहुत जरूरी है, पर हमारी परंपराएं अलग-अलग हैं, सभी सम्प्रदाय के अलग-अलग गुरु भगवंतों के आहार विहार की शैली में अंतर है तो ऐसे में 'एकता' कैसे स्थापित हो सकती है, जब हमारे जैन पर्व एकसाथ एकरूप में नहीं मनाये जा रहे तो हम 'एकता' की बात कैसे कर सकते हैं?
आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से विमुख हो रही है, आचार्य श्री का कहना है कि यदि बच्चों को बचपन से ही संस्कार दिया जाए तो वे युवावस्था में भी अपने धर्म और समाज से जुड़े रहते हैं, यदि युवावस्था में उन्हें धर्म समाज से जोड़ा जाए तो उनकी जीवन शैली इसके विपरीत रहती है, जिससे वह विमुख हो जाते हैं। बच्चों की संस्कार पाठशाला सर्वप्रथम परिवार, तत्पश्चात समाज द्वारा संचालित जैन पाठशाला, जो प्रतिदिन और साप्ताहिक होती है, उसके बाद राष्ट्रस्तर पर आयोजित शिविर जो १२ महीनों में कई बार होते है, पिछले वर्ष चित्तौड़गढ़ में संस्कार शिविर 'अभिमोक्षम' का आयोजन किया गया था, जिसे गोल्डन बुक ऑफ वर्ड रिकॉर्ड में भी दर्ज किया गया, यह सबसे लंबा और सबसे अधिक संख्या वाला शिविर था, जिसमें पूरे भारत से लगभग २००० बच्चे सम्मिलित हुए थे और यह शिविर १७ दिनों तक चला था, ऐसे शिविर प्रतिवर्ष होने से बच्चों में धर्म के संस्कार जागृत होते हैं, इसीलिए ऐसे संस्कार शिविर आयोजित होते रहने चाहिए।
'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए।
सुरेश जी का जन्म 'बीकानेर' में और प्रारंभिक शिक्षा 'कोलकाता' में संपन्न हुई है। वर्तमान में आप 'बीकानेर' में बसे हुए हैं और केमिस्ट क्षेत्र में कार्यरत हैं। बीकानेर साधुमार्गी जैन सेवा समिति के चार वर्षों तक मंत्री पद पर रहे हैं। बीकानेर केमिस्ट एसोसिएशन के मंत्री, उपाध्यक्ष पदों पर रहे तथा १७ सालों तक अध्यक्ष पद की भूमिका निभाई है। महावीर इंटरनेशनल, जवाहर विद्यापीठ से भी जुड़े हैं, व्यापार मंडल के कार्यकारिणी से भी जुड़े हुए हैं, अन्य कई संस्थाओं से जुड़े हैं। जय भारत!

- जिनागम

सुभाष नागौरी
व्यवसायी व समाजसेवी
छोटी सादड़ी निवासी-मुंबई प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८२०१६६७३८

सुभाष जी आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के प्रति अपने भावों को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि आचार्य श्री के प्रत्येक गुण और बातें सभी के लिए प्रभावकारी हैं, विशेषकर उनकी गंभीरता और स्पष्टवादीता उनके सबसे अहम गुणों में से एक है। आचार्य श्री द्वारा समाज को व्यसन मुक्ति और उत्क्रांती का आयाम दिया गया है, जिसे संघ समाज द्वारा निष्ठा से अपनाने का प्रयास किया जा रहा है। 'उत्क्रांती' भारतीय समाज के लिए सबसे अधिक उपयोगी है, जो अमीर गरीब का अंतर मिटा देती है, समाज में समरसता ला सकती है और व्यसन मुक्ति तो समाज के प्रत्येक व्यक्ति के लिए बहुत ही लाभकारी है, इससे समाज में कई लोग लाभान्वित भी हुए हैं।
'जैन एकता' आज हमारे समाज के लिए बहुत ही जरूरी है, किसी भी परिस्थिति से सामना करने के लिए समाज में 'एकता' होना बहुत जरूरी है। जैन समाज की जनसंख्या बहुत ही कम है, राजनीतिक मुद्दा ले लीजिए या सामाजिक मुद्दा, सशक्त रूप से अपने आपको प्रस्तुत करने के लिए समाज में एकता होनी बहुत जरूरी है। समाज में एकरूपता रहेगी तो इससे संपूर्ण संघ समाज को लाभ मिलेगा।
आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से कम ही जुड़ी है और इसका कारण उनकी जीवन शैली व आधुनिक शिक्षा प्रणाली, जिससे बच्चों को अपने धर्म और समाज से जुड़ने का समय ही नहीं मिलता, उनका जीवन बहुत ही व्यस्त है, माता-पिता भी मजबूर हैं।
'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम और पहचान 'भारत' नाम से ही रहना चाहिए, इस अभियान का मैं पूर्ण समर्थन करता हूं।
सुभाष जी मूलतः राजस्थान स्थित 'छोटी सादड़ी' के निवासी हैं। आपका जन्म और शिक्षा यहीं संपन्न हुई है। १९७८ से आप मुंबई में बसे हुए हैं और मार्बल ग्रेनाइट के व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं, अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ के सदस्य हैं। भारतीय जैन संघठना, राजस्थानी सेवा संघ आदि संस्थाओं से जुड़े हैं। जय भारत!

- जिनागम

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

भारत को 'भारत' ही बोला जाए
मैं भारत हूँ फाउंडेशन

अभय चंडालिया
उपाध्यक्ष नॉर्थ जोन तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम
राजलदेसर निवासी-दिल्ली प्रवासी
भ्रमणध्वनिः ९३१०११६१११

अभय जी 'जैन एकता' के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं कि 'जैन एकता' जितनी होगी, उतना ही जैन समाज के लिए अच्छा है, जब हमारे आचार-विचार एक हैं, तीर्थंकर एक हैं, तो 'एकता' तो होनी ही चाहिए। जैन समाज में 'एकता' नहीं है, यह कहना भी गलत होगा, क्योंकि जहां जरूरत पड़ती है तो वहां समस्त जैन पंथ 'एक' हो जाता है, एक दूसरे के साथ खड़े रहते हैं, न सिर्फ जैन समाज के लिए बल्कि अन्य समाज के लिए भी जैन समाज खड़ा रहता है। 'एकता' की परिभाषा सीखनी है तो जैन समाज सर्वोत्तम उदाहरण है। भले ही हर संप्रदायों के आचार्यों के मत अलग-अलग हैं, अपने-अपने नियम और परंपराएं हैं, सिर्फ यही एक भिन्नता है, यह कोई जरूरी नहीं है कि हम एक ही तारीख को अपने त्यौहार मनाएं, तो ही हम 'एक' माने जाएंगे। हम 'एक' परिवार हैं, जिस तरह 'एक' परिवार में अलग-अलग विचारधारा के लोग एक साथ रहते हैं, इस तरह हमारा जैन समाज है।

जैन समाज भले ही संख्या में अल्पसंख्यक हैं पर देश की जीडीपी में जैन समाज बहुसंख्यक से भी ऊपर है, अल्पसंख्यकों के लिए मिलने वाला लाभ जैन समाज के लिए इतना मायने नहीं रखता, क्योंकि जैन समाज अपने आप में ही सक्षम है। लोगों में अल्पसंख्यक के प्रति जागरूकता निर्माण होगी तो अच्छा ही है, पर जैन समाज के लिए यह उतना लुभावना नहीं है।

आज के युवाओं में अपने धर्म और समाज के प्रति जागरूकता बढ़ानी चाहिए, आज का युवा वर्ग जागरुक है, जागरूक नहीं होता तो युवक संघ, किशोर मंडल, कन्या मंडल जैसी संस्थाएं नहीं बनती, हर संप्रदाय में यह संस्थाएं बनी हुई हैं, हमें सकारात्मकता को देखना चाहिए ना की नकारात्मक बातों पर ध्यान देना चाहिए, थोड़ा है थोड़े की और जरूरत है।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत', राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना कि बिल्कुल अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए, यदि यह अभियान पूरा हो जाए तो यह बहुत ही अच्छा है और लगता भी है कि बहुत ही जल्दी यह अभियान सफल होगा।

अभय जी मूलतः राजस्थान के चुरू जिले में स्थित 'राजलदेसर' के निवासी हैं। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा 'कोलकाता' में संपन्न हुई है, आपने एलएलबी की भी शिक्षा ग्रहण की है। २००६ से दिल्ली में बसे हैं और इन्वेस्टमेंट रिकवरी व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। भारतीय जैन संघठना के कार्यकारिणी सदस्य, जैन सोशल ग्रुप के निवर्तमान अध्यक्ष, जैन विश्व भारती के सलाहकार, नॉर्थ जोन तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम दिल्ली के उपाध्यक्ष हैं, अन्य कई संस्थानों से भी जुड़े हुए हैं। जय भारत!

- जिनागम

सुमति कुमार सेठिया
सचिव साधुमार्गी जैन संघ दिनहट्टा
उदासर निवासी-दिनहट्टा प्रवासी
भ्रमणध्वनिः ९४३४०२५००२

सुमति जी आचार्य श्री रामलाल जी म.सा.के प्रति अपने भावों को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि आचार्य श्री के वर्ष में एक बार दर्शन लाभ अवश्य प्राप्त करते हैं, कई बार उनके प्रवचनों को सुनने का सुअवसर मिला, उनके दर्शन एवं नाम स्मरण करने से ही मन में धर्म के प्रति अपार श्रद्धा जागृत होती है, उनके उपदेश न सिर्फ समाज बंधुओं के लिए बल्कि समस्त प्राणी मात्र के लिए होते हैं। श्रावकों को जैन सिद्धांत के बारह व्रत धारण कर जीवन को उन्नति करने के लिए प्रेरणा देते है, उनके गुणों के बारे में जितना कहा जाए उतना कम है।

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से हमारे समाज में 'जैन एकता' की बहुत जरूरत है और यह कार्य हमारे आचार्यों और गुरु भगवंतों के द्वारा ही संभव हो सकता है, क्योंकि श्रावकों में कहीं कोई भेदभाव नहीं दिखाई देता, गुरु भगवंतों के पहनावे से उन्हें जाना जा सकता है कि वे किस पंथ संप्रदाय से हैं, यदि सभी गुरु भगवंतों और श्रावकों की भावना एक हो तो 'जैन एकता' अवश्य स्थापित हो सकती है। धर्म तो एक ही है, गुरु अलग-अलग हो गए तो पंथ अलग बन गए। 'जैन एकता' की समाज को बहुत जरूरत है पर यह असंभव सा लगता है। आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से जुड़ी है, जिन क्षेत्रों में चरित्र आत्माओं का विचरण होता है, उन क्षेत्रों के युवा वर्ग में भी अपने धर्म और समाज के प्रति जुड़ाव रहता है और जिन क्षेत्रों में चरित्र आत्माओं का विचरण नहीं होता, उस क्षेत्र के युवा वर्ग भी समाज और धर्म के प्रति उदासीन होते हैं। समाज के युवा वर्ग में दिन प्रतिदिन धर्म और समाज के प्रति जागरूकता आ रही है, काफी सार्थक बदलाव हो रहे हैं। युवा वर्ग को जागरुक करने के लिए स्थानीय संघ एवं परिवार को आगे आना चाहिए।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही रहना चाहिए।

सुमति जी मूलतः राजस्थान के 'बीकानेर' जिले में स्थित 'उदासर' के निवासी हैं, आपका जन्म 'राजस्थान' और संपूर्ण शिक्षा पश्चिम बंगाल के 'कुचबिहार' में संपन्न हुई है, यहां आप व्यापार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्य में भी सक्रिय रहते हैं। साधुमार्गी जैन संघ के सचिव पद पर कार्यरत हैं, सेवा संकल्प संस्था से भी जुड़े हुए हैं। जय भारत!

- जिनागम

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

अभय चोपड़ा
अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ राष्ट्रीय कार्यसमिति सदस्य
रतलाम मध्य प्रदेश
भ्रमणध्वनि: ९८२७५१५०१०

अभय जी आचार्य श्री रामलाल जी म.सा.के प्रति अपने भाव को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि आचार्य श्री 'जैनागम' के परम ज्ञाता हैं, त्यागी व तपस्वी हैं, सबको साथ लेकर चलने वाले हैं, उनके दर्शन लाभ के समय ऐसा लगता है कि कि उनके सानिध्य में ही सब छोड़-छाड़ कर बैठ जाएं, श्री राम गुरु के चेहरे का तेज ऐसा है, जिसे देखने पर एक सकरात्मकता आ जाती है और मन में परमशांति की अनुभूति होती है। आचार्य श्री ने व्यसन मुक्ति व उत्क्रांती को बढ़ावा दिया है, जिससे समाज में शिष्टाचार बना रहे और फिजूलखर्ची ना हो, समाज में इन नियमों का बड़े निष्ठा से पालन किया जा रहा है, उनकी कृपा दृष्टि समाज पर ऐसे ही बनी रहे, यही कामना करते हैं।

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है एक तो हमारी संख्या इतनी कम है, उस पर भी यदि हम इसी तरह पंथ और संप्रदाय में बंटे रहेंगे तो हमारा वर्चस्व समाप्त हो जाएगा, अन्य धर्म और समाज का वर्चस्व हम पर बढ़ता जाएगा, अपने धर्म समाज की रक्षा हेतु समाज में 'एकता' होना बहुत जरूरी है।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज के प्रति अधिक जागरूक है, कहा जा सकता है की आज दीक्षा लेने वालों में अधिकतर संख्या शिक्षित युवाओं की होती है।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित ही अपने देश का एक ही नाम, एक ही पहचान रहनी चाहिए 'भारत'!

अभय जी मूलतः 'नाडोल' के निवासी हैं, आपका परिवार कई वर्षों से 'रतलाम' में बसा हुआ है। आपका जन्म व शिक्षा 'रतलाम' में ही संपन्न हुई है, यहां आप कारोबार से जुड़े हुए थे, वर्तमान में सेवानिवृत्त है, सामाजिक कार्यों में सक्रिय रहते हैं। अखिल भारतीय साधुमार्गी जैन संघ कार्यसमिति के सदस्य हैं, स्थानीय संस्था पंचांग ओसवाल से भी जुड़े हुए हैं। जय भारत!

- जिनागम

मनोज डागा
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष अ.भा.साधुमार्गी जैन संघ,
बंगाल,बिहार,झारखंड,आंशिक,उडिसा,नेपाल,भुटान अंचल
गंगाशहर निवासी-कोलकाता प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८३०३०४९३९

मनोज जी आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के प्रति अपने भावों को व्यक्त करते हुए कहते हैं कि आचार्य श्री की प्रत्येक बातें हमारे लिए बहुत ही प्रभावशाली हैं चाहे वह उनकी चर्या हो, क्रिया हो, संयम हो या संघ का व्यवस्थापन। आचार्य श्री के दर्शन लाभ से बहुत ही सुखद अनुभूति होती है, हमारे मन में जितनी भी शंकाएं उन सबका निवारण आचार्य श्री के पास रहता है कभी-कभी तो बिना पूछे ही समस्याओं का समाधान मिल जाता है, उनके प्रवचनों में जीवन जीने की शैली, धार्मिकता, आगम, सामाजिकता सभी समाहित होते हैं, उन्होंने व्यसन मुक्ति और उत्क्रांती का जो आयाम समाज संघ को दिया है उससे ना सिर्फ साधुमार्गी समाज बल्कि अन्य धर्म और समाज के लोग भी प्रभावित हुए हैं। 'उत्क्रांति' के माध्यम से समाज में व्यर्थ में खर्च और दिखावे पर जो रोक लगी है वह अद्भुत है। आचार्य श्री के चरणों में कोटि-कोटि वंदन।

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि 'जैन एकता' तो होनी ही चाहिए और यह कार्य सभी संप्रदाय, पंथ, संघ के प्रमुख पुरोधा के हाथों में ही है। साधु संत यदि एकमंच पर स्थापित हों तो ही समाज एकता ओर बढ़ सकता है। जैन समाज हर क्षेत्र में सक्षम है पर जनसंख्या की दृष्टि से बहुत ही कम है। समाज में एकता स्थापित होगी तभी हमारा समाज मजबूत बनेगा।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज के प्रति जागरुक है, संघ समाज का कोई भी कार्य हो, युवा वर्ग ही सबसे आगे होता है। युवाओं को यदि लगातार उचित मार्गदर्शन मिले तो वह कभी भी अपने धर्म और समाज से विमुख नहीं होंगे। बचपन से ही यदि जागृति निर्माण होगी, तो युवावस्था में भी वे जागरुक रहेंगे, समय-समय पर संघ द्वारा शिविर का आयोजन किया जाता है, पिछले वर्ष 'अभिमोक्षम' शिविर का आयोजन किया गया था, जो लगातार १७ दिनों तक चला, इस शिविर गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में भी अपना नाम दर्ज किया गया, ऐसे ही शिविरों के माध्यम से युवाओं व बच्चों में समाज के प्रति निष्ठा निर्माण होती है।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित ही अपने देश का नाम केवल 'भारत' ही रहे तो इससे अच्छी और कोई बात नहीं हो सकती।

मनोज जी मूलतः राजस्थान स्थित 'गंगाशहर' के निवासी हैं। आपका जन्म और शिक्षा असम के 'सिलापथार' में संपन्न हुई है। १९९० से आप कोलकाता में बसे हैं और विज्ञापन क्षेत्र में कार्यशील हैं, साथ ही आप सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय हैं, वर्तमान में अ.भा.साधुमार्गी जैन संघ बंगाल,. बिहार,झारखंड,आंशिक,उडिसा,नेपाल,भुटान अंचल के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष हैं। कोलकाता साधुमार्गी जैन संघ और अहिंसा परिषद से जुड़े हुए हैं। जय जिनेन्द्र! जय भारत!

- जिनागम

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

आचार्य श्री विद्यासागरजी धर्म के साथ देश की पहचान की व्याख्या विश्वभर में की

- अमित शाह केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री

राजनांदगांव: केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह छत्तीसगढ़ के राजनांदगांव में आचार्य गुरुवर विद्यासागर जी महाराज के प्रथम समाधि स्मृति महोत्सव में शामिल हुए, इस दौरान शाह ने आचार्य श्री विद्यासागर जी की स्मृति में १०० रुपए का स्मारक सिक्का, डाक विभाग का ५ रुपए का विशेष लिफाफा, १०८ चरण चिन्हों व चित्र का लोकार्पण और प्रस्तावित समाधि स्मारक 'विद्यायतन' का शिलान्यास किया, इस अवसर पर छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय उप-मख्यमंत्री विजय शर्मा और पूज्य मुनि श्री समता सागर जी महाराज सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। श्री शाह ने कहा कि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज एक युग पुरुष थे, जिन्होंने एक नए विचार और नए युग का प्रवर्तन किया। कर्नाटक में जन्में आचार्य गुरुवर श्री विद्यासागर जी महामुनिराज अपने कर्मों से भारत, भारतीय संस्कृति, भारतीय भाषाएँ और भारत की पहचान के ज्योतिर्धर बने। श्री शाह ने कहा कि शायद ही यह सम्मान किसी ऐसे धार्मिक संत को मिला होगा, जिन्होंने धर्म के साथ-साथ देश की पहचान की व्याख्या विश्व भर में की हो।

प्रतीक डी. पाटनी को प्राप्त सर्वोत्कृष्ट पुरस्कार

चिकलठाणा, महाराष्ट्र: गवर्नमेंट इंजीनियरिंग कॉलेज औरंगाबाद की ओर से यूनाइटेड नेशन ऑफिस ऑन ड्रग्स एंड क्राइम्स, संयुक्त राष्ट्र मादक पदार्थ एवं अपराध कार्यालय विषय पर ३१ जनवरी से २ फरवरी २०२५ तक कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया गया था, जिसमें औरंगाबाद एवं महाराष्ट्र के इंजीनियर, लॉ, मेडिकल कॉलेज के ६० छात्रों ने भाग लेकर जर्मनी, रूस, यूके आदि के साथ अपने विचार व्यक्त किए। संपूर्ण विश्व को मादक पदार्थ एवं अपराध से कैसे मुक्ति मिले, इस पर गवर्नमेंट इंजीनियरिंग कॉलेज औरंगाबाद के मैकेनिकल इंजीनियर प्रथम वर्ष छात्र प्रतीक पाटनी ने कजाकिस्तान राष्ट्र को लेकर अत्यंत अभ्यास पूर्वक प्रभावी विचार व्यक्त किया और बेस्ट डिक्लिग्शन अवार्ड सर्वोत्कृष्ट प्रतिनिधि पुरस्कार प्राप्त किया। पत्रकार एम.सी. जैन, प्रो. डॉ. रमेश एम. पाटनी, इंजी. सुनील जोशी, डॉ. डोंगरे, डॉ. कोठारी, डॉक्टर प्रीति तडैया मुंबई, डॉक्टर निलम ने शुभकामनाएं प्रेरित की है।

- एम.सी. जैन, पत्रकार

दिगम्बर जैन समाज के तपस्वी समाजसेवी डॉ. पन्नालाल जी पापड़ीवाल का देह परिवर्तन

चिकलठाणा, महाराष्ट्र: दिगम्बर जैन समाज के वरिष्ठ समाजसेवी तीर्थ क्षेत्र कमेटी महाराष्ट्र के २७ वर्षों तक अध्यक्ष, भारतवर्ष की महान साध्वी गणिका आर्यिका ज्ञानमती माताजी के परम भक्त, पशु हत्या के विरोध में आवाज बुलंद करने वाले, पैठण नगर पालिका के २५ वर्षों से भी अधिक समय तक नगर सेवक रहे पापड़ीवाल जी का ७ फरवरी २०२५ देह परिवर्तन हुआ, वे ९२ वर्ष के थे। सिद्ध क्षेत्र मांगीतुंगी में आदिनाथ तीर्थंकर के अखंड प्रस्तर में १०८ फीट ऊंची मूर्ति निर्माण के लिए २० वर्ष निरंतर मांगीतुंगी में निवास किया, आपने पीछे दो पुत्र संजय व विजय के साथ पूरा भरा पूरा परिवार छोड़ गए हैं।

जय गुरु नाना जय महावीर जय गुरु राम

हम भक्तों के आप भगवान, पावन माटी पावन धाम
हो जाती है धरा पावन,जहाँ विचरण आप करते हैं।
धरती भी हो जाती शीतल, जहाँ चरण गुरु राम के पड़ते है।

राम चमक रहे भानु समाना

दीक्षा दिवस ९ फरवरी पर कोटि-कोटि वंदन

वन्दन कर्ता
श्रीमती चन्दन बाला नाथुलालजी मेहता
दिलीप - रजनी मेहता
सुविधी - सान्धिय मेहता
अहमदाबाद / बिनोना (राज)

भारत को भारत ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

युगप्रवर्तक, विश्व वंदनीय, संत शिरोमणि
१०८ आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के
प्रथम समाधि दिवस पर
भावपूर्ण विनयांजलि

के. सी. जैन मेडिकल स्टोर्स, चिकलठाणा, अजिंठा मेडिकल एंड एज्युकेशन संस्था
एन-४, सिडको, प्रीति क्लीनिक चिकलठाणा, सौ. हेमलता बाई
एम. पाटनी मेडिकल एंड एज्युकेशन संस्था, प्रीति क्लीनिक एन-३,
एम.सी.जैन, पत्रकार ग्रंथालय जैनगिरी, जटवाड़ा, पाटनी लॉन्स,
केंब्रिज के सामने कचनेरजी रोड, चिकलठाणा
एम.सी. जैन पत्रकार-सौ. हेमलताजी एम. जैन, प्राचार्य डॉ. राजेश एम.पाटनी,
सौ. डॉ. स्नेहल आर. पाटनी, दिनेश एम.पाटनी, सौ. मंजूषा डी. पाटनी,
डॉ. प्रीती.आ. टदैया (बी.डी.एस., एम.डी.एस.), डॉ. नीलम (एम.डी.) औरंगाबाद
प्रीतेश आर. पाटनी, प्रतीक डी. पाटनी चिकलठाणा, औरंगाबाद, महाराष्ट्र, भारत-४३१००३

INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
INDIA GATE का नाम
Remove INDIA Name From The Constitution
'भारतद्वार' लिखवायें

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

युग पुरूष आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के दीक्षा दिवस पर कोटि-कोटि वंदन
राम चमक रहे भानु समाना

Rajeev Surya
Mob: 9425092951

Aditya Surya
Mob: 9425091002

G. S. METALICA
Importer and Manufacturer of Brass and Copper Sheets & Circles & Exporter Of Brass And Copper Ingots

GokulRas
Pure Veg Restaurant

26, Jawahar Marg, Patni Bazar, Mewar Niwas,
Ujjain, Madhya Pradesh, bharat- 456010
63, Industrial Area, Udyogpuri, Agar Road,
Ujjain, Madhya Pradesh, bharat -456010
Ph.: (R) 0734-2585693, 3551572 / email:gsmetalicaujn@gmail.com /
Web: gsmetalica.wordpress.com

राम चमक रहे भानु समाना
आचार्य भगवंत युगपुरूष रामलाल जी म.सा. के दीक्षा दिवस ९ फरवरी पर कोटि-कोटि नमन

Subhash Nagori
Mob : 9820166738

Sunrise Marble
Kaveri Ceramics
SUPPLIER & STOCKIST OF
All kinds of Marble, Granite, Italian, Stones & Ceramic Tiles

10, Annis Compound, Opp. Municipal School,
Ghatkopar Link Road, Saki Naka,
Mumbai, Maharashtra, Bharat-400072

एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

कर्नाटक में शोभाताई आर धारीवाल इंग्लिश स्कूल का उद्घाटन

बेलगाम: कर्नाटक के बेलगाम के कुडाची के ग्रामीण इलाकों में अंग्रेजी माध्यम के स्कूल नहीं हैं और छात्रों को अंग्रेजी स्कूल में पढ़ने के लिए तालुका जाना पड़ता है। शांतिसागर वेलफेयर सोसाइटी के अध्यक्ष और पदाधिकारियों ने आरएमडी फाउंडेशन की उपाध्यक्ष शोभाताई आर. धारीवाल से मुलाकात की और उनसे अंग्रेजी स्कूल बनाने का अनुरोध किया। तदनुसार, अंग्रेजी हाई स्कूल की इमारत का निर्माण किया गया और स्कूल का उद्घाटन समारोह आयोजित किया गया। स्कूल के ट्रस्टी, छात्र, अभिभावक, स्थानीय नेता और युवा बड़ी संख्या में मौजूद थे। गांव में अंग्रेजी स्कूल की सुविधा मिलने से अभिभावक और छात्र खुश हुए, सभी ने आरएमडी फाउंडेशन को धन्यवाद दिया।

बता दें कि आरएमडी फाउंडेशन ने स्वास्थ्य, शिक्षा, खेल, पर्यावरण और स्वास्थ्य के क्षेत्र में पूरे भारत में महत्वपूर्ण कार्य किया है और आज भी जारी है, इसमें श्री रसिकलाल एम. धारीवाल के जन्मदिन पर हर साल १ मार्च को कोरेगांव पार्क में रक्तदान शिविर का आयोजन, साल भर वृक्षारोपण और 'एक पेड़ माँ के नाम – वृक्षारोपण और संरक्षण' योजना, ग्रामीण, शहरी और आदिवासी क्षेत्रों में छात्रों को तकनीकी ज्ञान प्रदान करने के लिए 'शोभाताई स्मार्ट क्लास योजना' के तहत स्मार्ट बोर्ड का वितरण, पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने वाले प्लास्टिक बैग के बजाय कागज के थैलों का उपयोग करने के बारे में छात्रों के बीच जागरूकता और कागज के थैले बनाने का प्रशिक्षण, रांजणगांव गणपति में 'प्याऊ', 'मैराथन' के माध्यम से विभिन्न मंदिरों, स्कूलों, कॉलेजों, सार्वजनिक पार्कों, सरकारी अस्पतालों आदि में जाने वाले लोगों को स्वच्छ और ठंडा पेयजल उपलब्ध कराना शामिल है। आरएमडी फाउंडेशन की अध्यक्ष जान्हवी धारीवाल बालन ने 'जिनागम' को बताया कि विदर्भ में निराश्रित और आत्महत्या से प्रभावित कृषक परिवारों की महिलाओं के लिए 'शोभाताई आर. धारीवाल उद्योग नगरी' के माध्यम से रोजगार का निर्माण किया जा रहा है, किसानों के लिए साल भर कृषि प्रशिक्षण के लिए निमगांव-माधा सोलापुर में अद्यतन 'सौ. शोभाताई कृषि प्रशिक्षण केंद्र (मुक्तांगन)' बनाया जा रहा है और चिकित्सा शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों को अपनी शिक्षा पूरी करने के लिए छात्रवृत्ति योजना लागू की जा रही है।

- जिनागम

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

Intensive

- Investment Banking
- NBFC
- Family Office

~ Unique Advice. Capital Market Insight, Efficient Execution, Delivering Financial Growth

~~~ Our Services ~~~

- Public Issue (IPO)
- M&A / Strategic Acquisition
- Wealth Management & Advisory
- Right Issue / Buy-Back
- Takeover / Open Offer
- Valuation & ESOP
- Private Equity
- QIP Placement
- Pre-IPO Placement
- Debt Syndication
- Amalgamation & Demerger
- Financial Engineering

Intensive Fiscal Services Private Limited

RO: - 914, Raheja Chambers, Free Press Journal Marg, Nariman Point, Mumbai –400021, India,
Tel: +91-22-22870443 / 44 / 45, **Contact Person:** Virendra Bajaj +91 9699292100
Email: admin@intensivefiscal.com , Web: www.intensivefiscal.com

एक बार फिर से.....पधारो सा!

राजस्थानी संस्थाओं का मंच

आपणों राजस्थान

8 वें वर्ष में प्रवेश

मुंबई स्थित जे.बी.नगर में

(प्राचीनतम राजस्थानी परिसर)

२९-३० मार्च २०२५ शनिवार - रविवार

राजस्थानी गीत, संगीत, नृत्य, खान-पान, व्यंजन

के साथ लेंगे राजस्थानी व्यंजनों का आनंद

आयोजक

भारत सरकार द्वारा पंजीकृत क्र. U80300MH2021NPL369101

मैं भारत हूँ फाउंडेशन

भारतीय संस्कृति की ओर अग्रसर

राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महामंत्री	राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
बिजय कुमार जैन, मुंबई	शोभा सादानी, कोलकाता	डॉ. गोविंद माहेश्वरी, कोटा	निशा लड्ढा, कोलकाता
मो. 9322307908	मो. 8910628944	मो. 9414183919	मो. 9830224300

अंतर्राष्ट्रीय संयोजक	अंतर्राष्ट्रीय संयोजक
अरूण मूँधड़ा, हॉस्टन, अमेरिका	किशोर जैन, लंदन, यूके
मो. 01(919)610-7106	मो. 044(770)3827595

मीडिया पार्टनर
दैनिक भास्कर
मुंबई

मीडिया पार्टनर
मेरा राजस्थान

मीडिया पार्टनर
जिनागम

मीडिया पार्टनर
मैं भारत हूँ

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए INDIA नहीं

'एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

Postal Registration Number - MCN/192/2024-2026
WPP License No. MR/Tech/WPP-319/North/2024-26
Published on 09th February 2025 & Posting On 10th & 12th of Every Month
Posted at Marol Bazar Post Office, Mumbai - 400 059

गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड व संपादक, मुद्रक व प्रकाशक विजय कुमार जैन, बी-217, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400 059, टेलीफैक्स-022-2850 9999
अणु डाक -mailgaylordgroup@gmail.com, अन्तरताना : www.jinagam.co.in, द्वारा विनय ग्राफिक्स, युनिट नं 13, रवी इन्ड. को.-ऑप. सोसाइटी लि., 25 महल इन्ड ईस्टेट, महाकाली केव्हज रोड, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400093 से मुद्रित करवाकर प्रकाशित किया गया।
RNI NO. MAHHIN/2006/19598